



दैनिक लोकतंत्र की शान

लोकतंत्र का स्तंभ

दिल्ली से प्रकाशित

गुरुवार 26 दिसम्बर 2024



Distributorship ke liye contact Karen . (9315755133 / ya email Karen) angenpharmaceuticals@gmail.com

समाचार

भाजपा अध्यक्ष नड्डा ने कैथोलिक बिशप कॉन्फ्रेंस मुख्यालय का दौरा किया

नूना न्यूज एजेंसी।

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री जे.पी. नड्डा ने क्रिसमस के अवसर पर यहां कैथोलिक बिशप कॉन्फ्रेंस ऑफ इंडिया (सीबीसीआई) मुख्यालय और सेंट्रल हार्ट कैथेड्रल चर्च का दौरा किया। नड्डा ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर जारी पोस्ट में कहा, 'जैसा कि हम ईसा मसीह के जन्म का जश्न मनाते हैं, आइए हम देने की भावना, शांति की खोज, आशा की शक्ति और एक राष्ट्र के रूप में हम कैसे प्रेम, करुणा और सद्भाव के मूल्यों को अपना सकते हैं और बढ़ा सकते हैं, इसका भी जश्न मनाएं।' भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि वह सभी देशवासियों की खुशी और कल्याण की प्रार्थना करते हैं। उन्होंने कहा, 'हमारा राष्ट्र सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास के मंत्र से निर्देशित होकर विकास के पथ पर आगे बढ़ता रहे और सभी भारतीयों के योगदान से विकसित भारत 2047 के अपने लक्ष्य तक पहुंचे। आप सभी को क्रिसमस की शुभकामनाएं! प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी सोमवार को सीबीसीआई का दौरा किया था।

भारतीय सीमा में घुसपैठ की कोशिश कर रहा संदिग्ध मारा गया: पुलिस

नूना न्यूज एजेंसी।

गंगानगर। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के जवानों ने गंगानगर जिले में भारत-पाकिस्तान सीमा पर भारतीय सीमा में घुसपैठ करने की कोशिश कर रहे एक संदिग्ध को मार गिराया। अधिकारियों ने बताया कि घटना मंगलवार देर रात की है। गंगानगर के जिला पुलिस अधीक्षक गौरव यादव ने बताया कि यह घटना केसरीसिंहपुर इलाके के एक गांव के पास हुई जब एक संदिग्ध व्यक्ति ने पाकिस्तान से भारतीय सीमा में घुसने की कोशिश की। उन्होंने बताया कि संदिग्ध भारतीय सीमा में लगे खंभे की तरफ आने की कोशिश कर रहा था। बीएसएफ के जवानों ने उसे चेतावनी दी। जब वह नहीं रुका तो जवानों ने गोली चला दी। इसमें उसकी मौत हो गई। उन्होंने बताया कि संदिग्ध के पास पाकिस्तानी मुद्रा, सिगरेट का पैकेट और कुछ अन्य सामान मिला है। उसके बारे में जानकारी जुटाई जा रही है।

पीएम मोदी ने किया केन-बेतवा परियोजना का शिलान्यास



नूना न्यूज एजेंसी।

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 25 दिसंबर को पूर्व प्रधानमंत्री भारत-रत्न से सम्मानित स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती पर मध्यप्रदेश के खजुराहो में देश की पहली महत्वाकांक्षी और बहुउद्देशीय केन-बेतवा राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना का शिलान्यास किया। पीएम मोदी ने कहा कि बीता दशक, भारत के इतिहास में जल-सुरक्षा और जल संरक्षण के अभूतपूर्व दशक के रूप में याद किया जाएगा। केन-बेतवा नदी जोड़ो राष्ट्रीय

>> 1980 में केन और बेतवा नदी को जोड़ने का आया था प्रस्ताव

केन-बेतवा रिवर लिंकिंग प्रोजेक्ट के जरिए देश में पहली रिवर लिंकिंग परियोजना शुरू हुई है। अस्सी के दशक में इस परियोजना का प्रस्ताव सामने आया था, जिस पर अब अमल होने जा रहा है। इसके तहत केन नदी के अतिरिक्त पानी को बेतवा नदी तक ले जाने के लिए एक नहर बनाई जाएगी। केन नदी के किनारे पहले एक बांध बनाया जाएगा, जिसका नाम है दीधन बांध। इस बांध में केन नदी का पानी स्टोर कर उसे नहर के जरिए बेतवा नदी तक पहुंचाया जाएगा। केन नदी देश की सबसे साफ सुथरी नदियों में से एक है, जो मध्य प्रदेश के कटनी जिले से शुरू होती है और विंध्य की पहाड़ियों के पठारी इलाके से होते हुए आगे जाकर उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के चिल्ला इलाके में यमुना नदी में मिल जाती है।

परियोजना से बुंदेलखंड की तस्वीर बदलने वाली है। आज मध्य प्रदेश के खजुराहो में कई विकास कार्यों के लोकार्पण और शिलान्यास कार्यक्रम का हिस्सा बनकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। जब देश में अटल जी की सरकार बनी, तब उन्होंने पानी से जुड़ी

>>> इस परियोजना की क्या है विशेषता

देश की पहली नदी जोड़ो योजना होगी ये नहर,केन्द्र, मध्यप्रदेश और यूपी सरकार के सहयोग से पूरा होगी.इस परियोजना की लागत- 44 हजार 605 करोड़ रुपए.90% खर्च केन्द्र सरकार और 10% खर्च राज्यो का होगा।103 मेगावाट बिजली का होगा उत्पादन, हजारों को रोजगार.27 मेगावाट सौर ऊर्जा के उत्पादन का भी है लक्ष्य।

>>> करोड़ों लोगों को होगा इसका लाभ

जल शक्ति मंत्रालय के मुताबिक केन-बेतवा परियोजना से सालाना 10.62 लाख हेक्टेयर इलाके को सिंचाई की सुविधा मिलेगी. 62 लाख लोगों को पीने का साफ पानी मिलेगा। इसके अलावा 103 मेगावाट हाइड्रोपावर और 27 मेगावाट सोलर पावर इससे पैदा करने की योजना है। इस प्रोजेक्ट पर 44,605 करोड़ रुपये लागत आने की संभावना है।

चुनौतियों को हल करने के लिए की सरकार बनी, कांग्रेस ने अटल गंभीरता से काम शुरू किया था। जी के सभी प्रयासों को उड़ते बस्ते में लेकिन 2004 में जैसे ही कांग्रेस डाल दिया।

फर्जी केस में सीएम आतिशी की गिरफ्तारी की तैयारी

केजरीवाल ने लगाया बड़ा आरोप

नूना न्यूज एजेंसी।

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल और दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी किए गए नोटिस को लेकर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान अरविंद केजरीवाल ने कहा कि हमने इतने सारे काम किए इसलिए हम कह रहे हैं कि हमें ही वोट दो। हम अपने काम पर वोट मांग रहे हैं। वो (बीजेपी) सिर्फ गालियों और काम रोकने पर वोट मांग रहे हैं। हमने महिला सम्मान योजना, जिसके तहत हर महीने महिला को 2100 रुपये देने का ऐलान किया गया और जिसे लेकर दिल्ली की कैबिनेट 1000 रुपये अर्था 3 या 4 दिन पहले हमें अपने सुत्रों से पता चला है कि ED, CBI और इनफम टैक्स, तीनों एजेंसियों की मीटिंग हुई है। उसमें ऊपर से आदेश आए हैं कि



कुछ भी फर्जी केस करके दिल्ली की सीएम आतिशी को गिरफ्तार किया जाए। मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ बहुत बड़ा आरोप लगा रहा हूँ।

अरविंद केजरीवाल ने आगे कहा कि इसी तरह से बुजुर्गों को संजीवनी योजना का ऐलान किया, इसके तहत बुजुर्गों को सारा इलाज हम करवाएंगे। इन दोनों योजना को लेकर जबरदस्त धोड़ लग रही है। कल तक महिला सम्मान योजना में 12.50 लाख रिजस्ट्रेशन और डेढ़ लाख के करीब बुजुर्गों ने संजीवनी योजना के तहत रिजस्ट्रेशन कराया है। इस चीज से बीजेपी खौफ में है। आपको बता

दें कि दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने एक नोटिस जारी किया था। इस नोटिस के जारी होने के बाद संजीवनी योजना और महिला सम्मान योजना पर अब सवाल खड़े हो गए थे।

'केजरीवाल महिला-बुजुर्गों को धोखा दे रहे हैं'

दिल्ली के स्वास्थ्य विभाग द्वारा इन योजनाओं को लेकर नोटिस जारी कर पर बीजेपी ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी थी। बीजेपी के मीडिया प्रभारी प्रवीण शंकर कपूर ने इस पूरे मामले पर कहा कि केजरीवाल महिला और बुजुर्गों को क्यों धोखा दे रहे हैं। आज ये समय आ गया है

>> सीएम आतिशी को गिरफ्तार करने की है तैयारी

अरविंद केजरीवाल ने आगे कहा कि हमें जानकारी मिली है कि दिल्ली के सीएम आतिशी को फर्जी केस बनाकर गिरफ्तार किया जाए। ईडी को कहा गया है कि आम आदमी पार्टी के सभी बड़े नेताओं के खिलाफ रेड की जाए। उनका मकसद है कि वो हमारी चुनाव तैयारी और हमारे प्रचार को बाधित करें। सुत्रों से पता चला है कि ट्रांसपोर्ट विभाग में फर्जी तरीके से आतिशी जी के खिलाफ केस तैयार किया जा रहा है। वो लो महिलाओं को मिलने वाली श्री यात्रा को रोकना चाहते हैं। हमें भरोसा है कि दिल्ली की जनता इसका जवाब देगी। हम लगता है कि उन्हें अपने काम को ब्योरा देना चाहिए। सिर्फ हमें रोकने से दिल्ली की जनता को लेकर हमारे काम का नुकसान नहीं होगा।

कि दिल्ली सरकार के ही स्वास्थ्य और महिला कल्याण विभाग को फजीवाड़े से जुड़ा नोटिस जारी किया। ये लोग आपका पर्सनल डाटा ले रहे हैं, पत्नी उनके साथ ये सब शेयर न करें. दोनों विभागों ने नोटिस जारी किया है, हमारी ऐसी कोई स्कीम नहीं है. अरविंद केजरीवाल को जवाब देना होगा कि पंजाब के बाद अब दिल्ली की महिलाओं से धोखा क्यों कर रहे हैं।

अरविंद केजरीवाल ने 12 दिसंबर को दिल्ली की महिलाओं के लिए दो बड़ी घोषणाएं की थीं. दरअसल, अरविंद केजरीवाल ने पहले तो महिला सम्मान योजना की शुरुआत की, जिसके तहत महिलाओं को 1000 रुपये दिए जाएं. इसके तुरंत बाद ही उन्होंने एक अन्य घोषणा करते हुए कहा कि चुनावों के बाद इस योजना के तहत दिए जाली रकम को 2100 रुपये कर दिया जाएगा. अरविंद

>> दिल्ली की जनता जवाब जरूर देगी

दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी हमने आज तक ईमानदारी से काम किया है हम आगे भी ईमानदारी से ही काम करेंगे। इनकी एजेंसियां अगर मुझपर झूठा केस करती है मुझे गिरफ्तार करती है तो मुझे इस देश की न्याय व्यवस्था पर भरोसा है कि चाहे कुछ हो जाए जीत हमेशा सच्चाई की ही होगी. इनके झूठे केस लगाने के बाद भी हमें जल्दी बेल मिलेगी। ये मुझे भरोसा है। आतिशी ने कहा कि आग दिल्ली वालों की सुविधाएं रोकना चाहते हैं, दिल्ली की जनता सब देख रही है. दिल्ली की जनता को पता है कि एक तरफ केजरीवाल हैं तो जो उनके लिए इतना काम कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ बीजेपी है जिसका दो काम है एक तो केजरीवाल को गाली देना और दूसरा दिल्ली की जनता को मिलने वाली सुविधाओं को रोकना।

कजरीवाल ने चुनावों से पहले दिल्ली की महिलाओं के लिए यह बहुत बड़ी घोषणा की है। अरविंद केजरीवाल ने इस योजना की घोषणा करते हुए कहा था कि हमारे कार्यकर्ता इस योजना के तहत घर-घर रिजस्ट्रेशन कराने आएंगे और तब सभी महिलाएं अपना रिजस्ट्रेशन अरानो से करा सकेंगी। लेकिन इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा था कि जल्द ही चुनावों की घोषणा हो जाएगी और इस वजह से रिजस्ट्रेशन काए जाने के बाद भी पैसे ट्रांसफर नहीं किए जा सकेंगे। हालांकि, चुनाव खत्म होते ही सभी महिलाओं को इस योजना के तहत 2100 रुपये दिए जाएंगे।

पटना में बीपीएससी छात्रों का विरोध प्रदर्शन जारी

अभ्यर्थियों ने पुलिस पर लगाया लाठीचार्ज का आरोप

नूना न्यूज एजेंसी।

पटना। 70 वीं बीपीएससी परीक्षा की दोबारा परीक्षा कराने की मांग को लेकर अभ्यर्थियों ने बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) के खिलाफ विरोध प्रदर्शन जारी है। एक अभ्यर्थी ने कहा कि हम सिर्फ शांतिपूर्वक अपनी मांगों (बीपीएससी के सामने) रखना चाहते थे, लेकिन पुलिस ने हम पर लाठीचार्ज करना शुरू कर दिया। हम पिछले 8 दिनों से विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। एक अन्य अभ्यर्थी ने कहा कि हम बदमाश नहीं हैं लेकिन हमें पीटा गया है। हम बीपीएससी से मांग



करते हैं कि वह हमारी मांगों को सुने और उन्हें पूरा करे। छात्र ने कहा कि आज एक अभ्यर्थी ने आत्महत्या कर ली है. इससे हम

नाराज हैं, फिर भी हम बीपीएससी गए। हमारी कोई नहीं सुन रहा और पुलिस हमें पीट रही है। बुधवार को, प्रदर्शनकारियों ने अपनी मांगों को लेकर बीपीएससी कार्यालय की ओर मार्च किया, जिसके कारण पुलिस के साथ उनका टकराव हुआ। बढ़ती स्थिति ने अधिकारियों को भीड़ को तितर-बितर करने के लिए कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया। इस बीच, इस घटना से अभ्यर्थियों में आक्रोश फैल गया है, जिनमें से कई ने पुलिस की प्रतिक्रिया को आलोचना की और अपना विरोध जारी रखने की कसम खाई। परीक्षा रद्द करने की

मांग को लेकर आयोग कार्यालय का घेराव करने जुटे बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) के अभ्यर्थियों पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया। परीक्षा प्रक्रिया में कथित अनियमितताओं पर अपनी शिकायतें व्यक्त करते हुए अभ्यर्थी पिछले कई दिनों से गर्दनीबाग में धरना दे रहे थे। बीपीएससी के अध्यक्ष परमार रवि मनुभाई ने इस महोत्सव की शुरुआत में आयोजित 70 वीं एकीकृत संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा (सीसीई) 2024 को रद्द करने से इनकार कर दिया था, जो प्रश्न पत्र लोक के आरोपों में फिर गयी थी। हालांकि, उन्होंने यह स्पष्ट

कर दिया कि बीपीएससी 13 दिसंबर को बाप परीक्षा परिसर परीक्षा केंद्र में नियुक्त किए गए उम्मीदवारों की पुनः परीक्षा के साथ आगे बढ़ रहा है और खुलासा किया कि पुनः परीक्षा 4 जनवरी, 2025 को आयोजित की जाएगी। बीपीएससी ने हाल ही में पटना के कुम्हार इलाके में बाप परीक्षा परिसर में आयोजित अपनी सीसीई की प्रारंभिक परीक्षा रद्द कर दी थी, जहां 13 दिसंबर को "अनियंत्रित" उम्मीदवारों द्वारा किए गए हंगामे के बाद ड्यूटी पर तैनात एक अधिकारी की दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई थी।

रईस खान वार्ड नं०-33 के रहने वाले कर्मठ, मेहनती ईमानदार कार्यकर्ता को दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी ने अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ का अध्यक्ष नियुक्त किया। क्षेत्र के कार्यकर्ताओं की ओर से ठेठ सारी बधाई।

रईस खान
वार्ड नं०- 33

निवेदक : आम आदमी पार्टी
मुंडका विधान सभा

हरिकृष्ण पब्लिक स्कूल में माता गजरी जी और साहिबजादों की श्रद्धांजलि अर्पित की



नई दिल्ली दिसंबर : दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधीन चलने वाले 13 गुरु हरिकृष्ण पब्लिक स्कूलों के छात्रों और स्टाफ ने आज माता गुजरी जी और छोटे साहिबजादों को एक साथ श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए एक नया रिकॉर्ड स्थापित किया। इस बारे में जानकारी

देते हुए दिल्ली गुरुद्वारा कमेटी के अध्यक्ष सरदार हरमीत सिंह कालका, जनरल सेक्रेटरी सरदार जगदीप सिंह काहलौं और धर्म प्रचार के मुखी सरदार जसप्रीत सिंह कर्मसर ने बताया कि यह कार्यक्रम सभी स्कूलों में सुबह 11:00 बजे एक साथ आयोजित किया गया, जिसकी जिम्मेदारी कमेटी के सदस्य



सरदार परविंदर सिंह लक्की को दी गई थी। उन्होंने बताया कि सभी स्कूलों के छात्रों और स्टाफ ने एक साथ वाटा लम्बियां ते रस्ता पहाड़ दा गीत गाया। उनका कहना था कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को साहिबजादों की शाहादत के ऐतिहासिक महत्व से अवगत कराना

और उनमें प्रेरणा, उत्साह, साहस, हिम्मत, और बहादुरी की भावना उत्पन्न करना था। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम बहुत ही सफल साबित हुआ और दिल्ली गुरुद्वारा कमेटी और गुरु हरिकृष्ण पब्लिक स्कूलों के इतिहास में पहली बार हुआ है। उन्होंने यह भी कहा कि भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम जारी रखे जाएंगे।

अरविंद केजरीवाल अब चुनावी जुमले ही नहीं बोल रहे बल्कि संजीवनी और महिला सम्मान के नाम पर चुनावी छलावा कर रहे हैं : बांसुरी स्वराज

नई दिल्ली दिसंबर : दिल्ली भाजपा की मंत्री और नई दिल्ली से सांसद बांसुरी स्वराज ने आज एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए आम आदमी पार्टी के मुखिया अरविंद केजरीवाल के दो प्रमुख झूठ महिला सम्मान एवं संजीवनी योजना के साथ ही उनके रोहिंग्या एवं बंगलादेशियों को समर्थन की निंदा की और दिल्ली भाजपा द्वारा अरविंद केजरीवाल सरकार के खिलाफ निकाले गए आरोप पत्र पर केजरीवाल का जवाब मांगा। बांसुरी स्वराज ने कहा कि अब अरविंद केजरीवाल दिल्ली भर में सिर्फ चुनावी जुमले नहीं बोर रहे बल्कि चुनावी छलावा कर रहे हैं।

आज हम माननीय उपराज्यपाल के पास बैठक करके आए हैं जहां स्वास्थ्य सचिव ने सार्वजनिक

रूप से कहा है कि संजीवनी जैसी कोई भी योजना दिल्ली में है ही नहीं। कुछ ऐसा ही महिला सम्मान के नाम पर भी अरविंद केजरीवाल छलावा कर रहे हैं। संजीवनी और महिला सम्मान के नाम पर केजरीवाल और उनकी पूरी टीम बुजुर्गों और महिलाओं के नंबर और निजी जानकारी इकट्ठा कर रही है इसलिए दिल्लीवालों को सावधान रहने की जरूरत है और अब केजरीवाल के किसी भी झंसे में आने की जरूरत नहीं है। स्वराज ने दिल्लीवालों से निवेदन करते हुए कहा कि अपना पर्सनल डेटा किसी के साथ भी साझा ना करें। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार की अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं हैं जिनको रूपांतर सरकार दिल्ली में अपने राजनीतिक द्वेष से लागू नहीं कर रही है और साथ ही कई योजनाओं में रुकावटें भी डालने में पीछे नहीं हटी है।

ग्रामीण विकास के लिए उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश को मिला अनुदान

नई दिल्ली दिसंबर : केंद्र सरकार ने वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान उत्तर प्रदेश में ग्रामीण स्थानीय निकायों के लिए पंद्रहवें वित्त आयोग अनुदान के रूप में 1598.80 करोड़ रुपये के असंबद्ध अनुदान की दूसरी किस्त जारी की है। ये धनराशि राज्य की सभी पात्र 75 जिला पंचायतों, सभी पात्र 826 ब्लॉक पंचायतों और सभी पात्र 57691 ग्राम पंचायतों के लिए जारी की गई है जबकि वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान आंध्र प्रदेश में ग्रामीण स्थानीय निकायों के लिए पंद्रहवें वित्त आयोग अनुदान के रूप में वित्तीय वर्ष 2024-25 के असंबद्ध अनुदान की दूसरी किस्त 420.9989 करोड़ रुपये के साथ-साथ वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए असंबद्ध अनुदान की पहली किस्त की धनराशि 25.4898 करोड़ रुपये की जारी की गई है। ये

केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने सुशासन कार्यशाला को किया संबोधित

नई दिल्ली दिसंबर : केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पृथ्वी विज्ञान तथा प्रधानमंत्री कार्यालय, परमाणु ऊर्जा विभाग, अंतरिक्ष विभाग, कार्मिक, लोक शिकायत और पेशन राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने सुशासन कार्यक्रमों पर राष्ट्रीय कार्यशाला को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में शासन को नया स्वरूप देने वाली परिवर्तनकारी गतिविधियों का उल्लेख किया। सुशासन सप्ताह के उद्घाटन समारोह में डॉ. जितेंद्र सिंह ने इन सुधारों के मुख्य चालक के रूप में सरकार के समग्र दृष्टिकोण की सराहना की। 19 से 25 दिसंबर तक चलने वाला यह सप्ताह पूर्व प्रधानमंत्री

जश्न-ए-रंग ने पेश की उद्योग जगत के लिए नई संभावनाएं

नई दिल्ली दिसंबर : सिरका इंडिया ने अपने वार्षिक कार्यक्रम जश्न-ए-रंग के चौथे संस्करण में ओडिशा के नई प्रीमियम वॉल पेंट्स रेंज लॉन्च की। यह इवेंट न केवल रंगों का उत्सव था, बल्कि नवाचार और स्थिरता के प्रति सिरका इंडिया की प्रतिबद्धता का प्रमाण भी था। कार्यक्रम में बॉलीवुड सितारों सारा अली खान और नुसरत बरुचा के साथ पंजाबी पॉप सिंगर्स अशोक मस्ती, जस्सी गिल और बब्बल राय ने चार चांद लगाए। ओडिशा, जो पर्यावरण-अनुकूल समाधानों के लिए जाना जाता है, ने इस नई रेंज में टिकाऊपन, वॉशेबिलिटी, और बेहतरीन कवरेज जैसी विशेषताएं शामिल की हैं। इस मौके पर सिरका इंडिया के चेयरमैन संजय अग्रवाल और ओडिशा के इटली के निदेशक अलेसांद्रो बैलेस्ट्रि समेत कई प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम में बॉलीवुड सितारों की शानदार परफॉर्मेंस और उद्योग जगत के विशेषज्ञों की भागीदारी ने इसे खास बना दिया। सिरका इंडिया के जॉइंट एमडी अर्पित अग्रवाल ने कहा, हम नवाचार और पर्यावरणीय जिम्मेदारी को प्राथमिकता देते हुए प्रीमियम उत्पाद पेश करने के लिए उत्साहित हैं।

पवन राठी ने अरविंद केजरीवाल से महिला सम्मान योजना पर सवाल उठाए

पवन राठी ने दिल्ली की महिलाओं को चुनावी वादों के तहत गुमराह करने का आरोप लगाया

नई दिल्ली दिसंबर : पूर्व निगम पार्षद पवन राठी ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से महिला सम्मान योजना के तहत पोल्टा कार्ड जारी करने को लेकर सवाल उठाए हैं। राठी ने आरोप लगाया कि आम आदमी पार्टी दिल्ली की महिलाओं को चुनावी पण्यदे के लिए गुमराह कर रही है। उन्होंने केजरीवाल से पूछा कि अगर उनकी पार्टी सच में महिलाओं के कल्याण के लिए

महिला एवं बाल मंत्रालय 26 दिसंबर मनाएगा को वीर बाल दिवस

नई दिल्ली, दिसंबर : महिला एवं बाल मंत्रालय 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस मनाएगा। इस अवसर पर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। भारत सरकार असाधारण उपलब्धियों के लिए सात श्रेणियों कला और संस्कृति, बहादुरी, नवाचार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, सामाजिक सेवा, खेल और पर्यावरण में बच्चों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार (पीएमआरबीपी) प्रदान करती है। इस बार 14 राज्यों के 17 बच्चों को इस पुरस्कार के लिए चुना गया है। इनमें 7 लड़के और 10 लड़कियां शामिल हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 26 दिसंबर को इन बच्चों को पुरस्कार प्रदान करेंगी। प्रत्येक विजेता को पदक, प्रमाण पत्र और प्रशस्ति पत्र प्रस्तुत किए जाएंगे।

राष्ट्रीय विज्ञान नाट्य महोत्सव 27 और 28 दिसंबर को आयोजित होगा

नई दिल्ली दिसंबर : नई दिल्ली में राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र में 27 और 28 दिसंबर को राष्ट्रीय विज्ञान नाट्य महोत्सव आयोजित किया जाएगा। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद का एक प्रमुख आयोजन है। इस महोत्सव में देशभर के 28 राज्यों और 8 केंद्र शासित प्रदेशों के ब्लॉक, जिला और राज्य स्तर पर चर्चित 40,000 से अधिक छात्र भाग लेते हैं। ये छात्र अपने रचनात्मक नाटकों के माध्यम से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, जलवायु परिवर्तन, जल संरक्षण और चिकित्सा क्षेत्र में नई खोजों जैसे विषयों पर प्रस्तुति देंगे। कार्यक्रम का उद्घाटन 27 दिसंबर को सुबह 9 बजे

अकेले रह रहे वृद्ध की तेजधार हथियार से हत्या

उचना दिसम्बर : गांव पालवा में सोमवार रात को एक वृद्ध की तेजधार हथियार से वार कर हत्या कर दी। घटना की सूचना मिलने पर उचना थाना पुलिस मौके पर पहुंची और फॉरेंसिक एक्सपर्ट टीम की सहायता से साक्ष्यों को जुटाया। मृतक बुजुर्ग व्यक्ति अविवाहित था। उचना थाना पुलिस ने मृतक के भाई के दामाद की शिकायत पर अज्ञात लोगों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। गांव पालवा निवासी ओमप्रकाश (65) अविवाहित था और अपने छोटे भाई के बगल में अपने मकान में अकेला रहता था। बीती देर शाम को किसी व्यक्ति



घटनास्थल पर मृत पड़ा वृद्ध।

ने तेजधार हथियार से हमला कर हत्या कर दी। घटना की सूचना पाकर उचना थाना पुलिस फॉरेंसिक टीम के साथ मौके पर पहुंच गई और हालातों का जांचा लिया। मृतक की महिला देने का वादा किया था, लेकिन दो साल बाद भी किसी को यह राशि नहीं मिली। इसके

पुलिस को दो शिकायत में बताया कि उसके ताऊ ससुर ओमप्रकाश के पड़ोसी से हत्या की सूचना मिली थी। जब वह मौके पर पहुंचा तो ओमप्रकाश खून से लथपथ फर्श पर पड़ा हुआ था। उचना थाना पुलिस ने सुभाग की शिकायत अज्ञात लोगों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मृतक ओमप्रकाश की हत्यारे के साथ हाथपाई हुई थी, उसने हत्यारे बचने का प्रयास भी किया था। बचाव के दौरान वहां रखी कुर्सी भी टूट गई। चार पाई के नीचे रखा तसला फलटा हुआ था। घटना स्थल पर बिखरे साक्ष्य इस तथ्य इशारा कर रहे थे कि वारदात को अंजाम किसी नजदीकी व्यक्ति ने दिया है।

पवन राठी ने अरविंद केजरीवाल से महिला सम्मान योजना पर सवाल उठाए

पवन राठी ने दिल्ली की महिलाओं को चुनावी वादों के तहत गुमराह करने का आरोप लगाया

राठी ने पार्टी के खिलाफ कुछ घटनाओं का हवाला भी दिया, जैसे राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल से हाथपाई कराना, दिल्ली सरकार के मंत्री द्वारा न्यूज एंकर के साथ अभद्र भाषा का इस्तेमाल और पंजाब में महिला पत्रकार को जेल में डालने की घटनाएँ। उन्होंने यह भी याद दिलाया कि पंजाब चुनाव में केजरीवाल ने 18 साल से ऊपर की महिलाओं को एक हजार रुपए की महिला देने का वादा किया था, लेकिन दो साल बाद भी किसी को यह राशि नहीं मिली। इसके

अलावा, राठी ने दिल्ली में महिलाओं को 21 सौ रुपए महीना देने के प्रस्ताव पर भी सवाल उठाए, यह कहते हुए कि इसके लिए आवश्यक धनराशि कहाँ से आएगी। उन्होंने गणना की और बताया कि यदि 1 करोड़ महिलाओं को यह राशि दी जाती है, तो कुल खर्च 2.52 लाख करोड़ रुपए होगा, जो कि एक अवास्तविक आंकड़ा है। राठी ने ट्विटर करते हुए केजरीवाल और दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी मालेनां से स्पष्ट जवाब मांगा है।

मरकजी तालीमी बोर्ड ने वंचित छात्रों पर प्रभावित करने वाले आरटीई संशोधन पर पुनर्विचार का आग्रह किया

नई दिल्ली, 25 दिसंबर। भारत सरकार ने हाल ही में शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम में संशोधन लाया है जिसके तहत कक्षा 5 और 8 में अनुत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को अगली कक्षा में प्रोन्नति के लिए अनैच्छिक चोषित कर दिया गया है। मरकजी तालीमी बोर्ड ने इस संशोधन पर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इसका उपयोग समुदायों के छात्रों, विशेषकर सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों पर हानिकारक प्रभाव पड़ेगा। जमाअत-ए-इस्लामी हिंद के मरकजी तालीमी बोर्ड के सचिव सैयद तनवीर अहमद ने कहा कि इस नीति के नकारात्मक प्रभाव होंगे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इस तरह के दंडात्मक उपाय लागू करने के बजाय सरकार को

स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने पर ध्यान देना चाहिए। कक्षाओं को सक्रिय शिक्षार्थियों की कक्षाओं में बदलने के लिए सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शिक्षकों को व्यापक प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। इस प्रशिक्षण में आनन्दपूर्ण शिक्षा की अवधारणा को क्रियान्वित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, जिससे छात्रों के शैक्षिक अनुभव और परिणामों में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए बाल-केंद्रित शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह अपनाया जाना चाहिए। यह सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) प्रणाली के क्रियान्वयन से प्राप्त किया जा सकता है, जो केवल रटने के बजाय छात्रों की समग्र प्रगति पर

ध्यान केंद्रित करता है। मूल्यांकन प्रणाली में सीखने की क्षमताओं और व्यावहारिक जीवन कौशल पर जोर दिया जाना चाहिए। इस संशोधन से सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना है, जिनमें से अधिकांश वंचित पृष्ठभूमि से आते हैं। इन स्कूलों में अक्सर अतिरिक्त ट्यूशन और सहायता सेवाओं का अभाव होता है, जिससे ऐसे छात्रों को और अधिक नुकसान होगा तथा असमानताएं बढ़ेंगी। इस नीति के कारण स्कूल छोड़ने वालों की दर में वृद्धि हो सकती है, क्योंकि असफल होने वाले छात्रों को सामाजिक कलंक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जिससे उनकी शैक्षणिक और व्यक्तिगत वृद्धि में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

देश की सुरक्षा और शांति बनाए रखने में सीआरपीएफ की अहम भूमिका : शाह।

डॉ. समरेंद्र पाठक/वरिष्ठ पत्रकार। नई दिल्ली, 25 दिसंबर 2024 (एनसी।) केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सीआरपीएफ देश में आंतरिक सुरक्षा और शांति सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभा रही है। श्री शाह ने यह बात यहां केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) मुख्यालय का दौरा करने के दौरान कही। आधिकारिक विज्ञापन के अनुसार, गृह मंत्री ने बल के वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात की और सीआरपीएफ के संचालन और प्रशासनिक दक्षता की व्यापक समीक्षा की। इस



अवसर पर केंद्रीय गृह सचिव सहित गृह मंत्रालय के कई वरिष्ठ अधिकारी बैठक में मौजूद थे। बैठक के दौरान सीआरपीएफ के महानिदेशक

अनीश दयाल सिंह ने गृह मंत्री को सीआरपीएफ में अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति सहित बल के शहीद जवानों के परिवारों के लिए लागू की जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं से अवगत कराया। श्री शाह ने कहा कि सीआरपीएफ ने नक्सलवाद से निपटने तथा पूर्वोत्तर राज्यों और जम्मू-कश्मीर में शांति और स्थिरता बहाल करने में सराहनीय काम किया है। केंद्रीय गृह मंत्री का यह दौरा राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति सीआरपीएफ की प्रतिबद्धता तथा राष्ट्र के प्रति इसके बहुमुखी योगदान के प्रति सरकार की मान्यता को रेखांकित करता है। एल.एस.

केजरीवाल सरकार की आबकारी नीति पर देवेन्द्र यादव का हमला दिल्ली की जनता ने भाजपा-आप के कुशासन को नकारा, 2025 में कांग्रेस को सत्ता में लाने की तैयारी

नई दिल्ली दिसंबर : दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि अरविंद केजरीवाल को रामलीला मैदान में बैठाकर उनको दिल्ली की सत्ता पर काबिज करवाने वाली भाजपा, कांग्रेस पार्टी की तुलना भ्रष्टाचारी आम आदमी पार्टी से करने से पहले अपने गिरेबान में झांके। क्योंकि दिल्ली ही नहीं पूरा देश जानता है कि केजरीवाल के झूठे आंदोलन के पीछे भाजपा खड़ी थी। सत्ता हथियाने के लिए भाजपा और आम आदमी पार्टी दिल्ली में कोई कसर नहीं छोड़ रही है जबकि दिल्ली की जनता इनके भ्रष्टाचार, कुशासन और दिल्ली के विकास

की अनदेखी को अच्छी तरह जान चुकी है और फरवरी 2025 के विधानसभा चुनावों में एक मत से कांग्रेस की ओर रुख करने का बना चुकी है। देवेन्द्र यादव ने कहा कि देश की सरकारी संस्थाओं को पूंजीपति हाथों में सौंपकर देश में बेरोजगारी और महंगाई के रिकॉर्ड तोड़ने वाली भाजपा कांग्रेस के कॉमन वैल्यू घोसला की बात करती है। जबकि निगम में रहते हुए दिल्ली के हर कौने में शराब के ठेके खोलने और अरविंद केजरीवाल के साथ शराब घोसले में बराबर के राजदार रहे हैं। देवेन्द्र यादव ने कहा कि कांग्रेस की दिल्ली सरकार के 15 वर्षों के शासन में कोई

मंत्री, अधिकारी किसी भी तरह के भ्रष्टाचार के आरोप सिद्ध नहीं हो सके और ही किसी मंत्री को जेल हुई जबकि अरविन्द केजरीवाल सहित उनका लगभग पूरा मंत्रीमंडल गैर कानूनी लेन-देन और आबकारी नीति को लागू करने में हुई अनियमितताओं के कारण भारी घोटाले किए और शीश महल में 175 करोड़ की बबादी दिल्ली की जनता के समाने है। उन्होंने कहा कि टुकड़े-टुकड़े गैंग पर आधारित केन्द्र में भाजपा सरकार पहले अपनी स्थिति और परिस्थिति देखे जिसने 400 पत्र का नारा दिया था जबकि दूसरे दलों के सहारे केन्द्र में सरकार बनाकर एक टांग पर खड़ी है।

डंपर की टक्कर से बाइक सवार की मौत

ओमपाहवा, यमुनानगर दिसंबर : तेज रफ्तार अनियंत्रित डंपर की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत हो गई। डंपर सहित चालक मौके से फरार हो गया। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची व शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजन को सौंप दिया। पुलिस ने डंपर चालक के खिलाफ केस दर्ज कर आगामी जांच शुरू कर दी। मृतक की पहचान नीरज कुमार (24) निवासी औरंगाबाद के रूप में हुई। नीरज की शादी पांच महीने पहले हुई थी।

भाजपा अध्यक्ष नड्डा ने कैथोलिक बिशप कॉन्फ्रेंस मुख्यालय का दौरा किया



दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री जे.पी. नड्डा ने क्रिसमस के अवसर पर यहां कैथोलिक बिशप कॉन्फ्रेंस ऑफ इंडिया (सीबीसीआई) मुख्यालय और स्क्रैड हार्ट कैथेड्रल चर्च का दौरा किया। नड्डा ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर जारी पोस्ट में कहा, जैसा कि हम ईसा मसीह के जन्म का जश्न मनाते हैं, आइए हम देने की भावना, शांति की खोज, आशा की शक्ति और एक राष्ट्र के रूप में हम कैसे प्रेम, करुणा और सद्भाव के मूल्यों को अपना सकते हैं और बढ़ा सकते हैं, इसका भी जश्न मनाएं। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि वह सभी देशवासियों की खुशी और कल्याण की प्रार्थना करते हैं। उन्होंने कहा, हमारा राष्ट्र सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास के मंत्र से निर्देशित होकर विकास के पथ पर आगे बढ़ता रहे और सभी भारतीयों के योगदान से विकसित भारत 2047 के अपने लक्ष्य तक पहुंचे। आप सभी को क्रिसमस की शुभकामनाएं! प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी सोमवार को सीबीसीआई का दौरा किया था।

संसद के पास एक शख्स ने खुद को लगाई आग, अस्पताल ले जाया गया



दिल्ली। बुधवार को संसद भवन के पास एक शख्स ने खुद को आग लगा ली। अज्ञात व्यक्ति गंभीर रूप से जल गया और उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया। पुलिस अधिकारियों को घटनास्थल पर पेट्रोल मिला और आगे की जांच जारी है। दिल्ली पुलिस के मुताबिक एक शख्स ने संसद के पास खुद को आग लगाकर आत्महत्या करने की कोशिश की है। उन्हें आरएमएल अस्पताल ले जाया गया है। पुलिस को घटना स्थल से दो पेज का सुसाइड नोट भी मिला है। बाद में दिल्ली पुलिस ने बताया कि आज उत्तर प्रदेश के बागपत के रहने वाले शायद एक व्यक्ति जितेंद्र ने रेल भवन चौराहे पर खुद को आग लगा ली। स्थानीय पुलिस और रेलवे पुलिस ने कुछ नारिकर व्यक्तियों के साथ मिलकर तुरंत आग बुझाई और व्यक्ति को अस्पताल भेजा गया। जैसा कि हम सभ्य सभ्य हैं मामला संभवतः बागपत में संबंधित और व्यक्तिगत दुश्मनी का है। आगे की जांच जारी है। अधिकारियों ने बताया कि दिल्ली पुलिस और फॉरेंसिक टीम के अधिकारी मौके पर पहुंच गए हैं और जांच शुरू कर दी गई है।

अटल बिहारी वाजपेयी ने सड़कों के माध्यम से देश को जोड़े की योजना बनाई।



कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह करनाल सुखविन्दर सोही

करनाल। बुधवार को करनाल पहुंचे कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने सर्व कल्याण मंच की ओर से आयोजित अटल बिहारी वाजपेयी के जयंती कार्यक्रम में शिरकत की। कार्यक्रम का आयोजन मान कालोनी में भाजपा युवा किसान मोर्चा के उपाध्यक्ष मनीत प्रजापत के निवास पर किया गया था। भाजपा कार्यकर्ताओं व प्रजापति (कुम्हार) चौपाल समिति ने कैबिनेट मंत्री को पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने अटल बिहारी वाजपेयी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर कैबिनेट मंत्री ने कहा कि सुशासन दिवस भारत के तीन बार प्रधानमंत्री रहे स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी से जुड़ा हुआ है। भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर को हुआ था। उनकी जयंती को ही सुशासन दिवस के रूप में मनाया जाता है। अटल बिहारी वाजपेयी ने सड़कों के माध्यम से देश को जोड़े की योजना बनाई। स्वर्णिम चतुर्भुज सड़क परियोजना प्रारंभ की। इसके साथ-साथ उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों के लिए प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना प्रारंभ की। इन योजनाओं के कारण विकास कार्यों की गति तीव्र हुई। कार्यक्रम के बाद प्रजापति (कुम्हार) चौपाल समिति ने मंत्री के समक्ष मांग रखी कि करनाल में प्रजापति धर्मशाला की स्थापना के लिए जल्द से जल्द जमीन उपलब्ध कराई जाए। इस पर मंत्री ने आश्वासन दिया कि सरकार यह मांग जल्द पूर्ण करेगी। इस मौके पर लड़ो संघू लाभ सिंह अशोक नारवाल राम कुमार प्रधान, राममेहर आर्य, प्रजापति (कुम्हार) चौपाल समिति प्रतिनिधि धर्मवीर आर्य, मनीत प्रजापत, देवी दयाल, पदम, राज कुमार जुंडला, डा. सुरेश, नवीन सरोहा, तरुण, साहिल कलवहड़ी, रविंद्र आर्य व ओमप्रकाश आदि मौजूद रहे।

डीसी मॉडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल में क्रिसमस पर विशेष सभा



कार्यक्रम के दौरान प्रिंसिपल अनीता लक्ष्मीधर, अध्यापक व छात्र।

अम्बाला छावनी : डीसी मॉडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल में धूमधाम से क्रिसमस समारोह मनाया गया। प्रिंसिपल अनीता लक्ष्मीधर ने बताया कार्यक्रम में छात्रों ने प्रथु यीशु के जीवन पर आधारित गीत और नृत्य प्रस्तुत किए। बच्चों ने सांता क्लॉज का वेश धारण किया और टॉपिंगों बांटी कहीं। स्कूल प्रिंसिपल ने बच्चों को यीशु मसीह के संदेशों पर जोर देते हुए मानव सेवा और परोपकार का महत्व समझाया। यीशु मसीह के जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश दिया और उनके जीवन के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर स्कूल के द्वारा जरूरत मंद लोगों की विभिन्न अन्य व जरूरत की चीजों से मदद की। इस अवसर पर जनरल मैनेजर कीर्ति तलवार, राजिंदर चहल,रतना आहूजा, प्रीति भट्ट, किरण, मयूरी अवनती,रितिका गुप्ता, मीनाक्षी के साथ अन्य भी उपस्थित थे।

चुनाव संचालन नियमों में संशोधन वापस ले सरकार : सीपीएम



नारायणगढ़, दिसम्बर : भारत की कम्युनिस्ट पार्टी एवं मार्क्सवादी ने मोदी सरकार द्वारा चुनाव संचालन नियमों में संशोधन करने के कदम पर अपनी कड़ी आपत्ति दर्ज करवाते हुए इसे राज्य सचिव सुरेंद्र सिंह व जिला सचिव सतीश सेठी। लोकतंत्र पर हमला बताया है। सीपीएम राज्य सचिव कामरेड सुरेंद्र सिंह व जिला सचिव सतीश सेठी ने कहा कि यह संशोधन इसलिए किया गया है ताकि राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों की वीडियो और अन्य डिजिटल ट्रेल्स सहित इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड तक पहुंच को प्रतिबंधित किया जा सके। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग ने अधिक पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए राजनीतिक दलों के परामर्श से शुरू में ही इन प्रावधानों को लागू किया था। सीपीएम नेताओं ने कहा कि मीडिया रिपोर्ट्स से पता चलता है कि सरकार ने नए नियमों का मसौदा तैयार करते समय भारत के चुनाव आयोग के साथ परामर्श किया था। इसलिए सीपीएम चुनाव संचालन नियमों में प्रस्तावित संशोधनों को तत्काल वापस लेने की मांग करती है।

राशिफल 25-12-2024 (बुधवार)

मेघ	वृषभ	मिथुन
व्यापारिक लाभ के रासे सुखेगे, शुभ भावनाओं के उदय से आत्मविश्वास बढ़ेगा, मान-सम्मान युक्त कार्य पूरा होगा, गृहस्थ जीवन में मधुरता, राजकीय पक्ष से सहयोग।	विवाहोपरि योजना का कार्य रुके, परिणित, वाद-विवाद का समापन, वैवाहिक जीवन में सुख शांति का वातावरण, दर्शनीय स्थलों की यात्रा का प्रसंग उपस्थित होगा।	आर्थिक पक्ष में असंतोष, सिद्धि का प्रयास निष्कृत, वात-वात पर क्रोध, भ्रमण, को लेकर परेशान, मित्रों से अन्वय, व्यर्थ की भागदौड़ में समय नष्ट, हानि भी।
कर्क	सिंह	कन्या
व्यापारिक लाभ के रासे सुखेगे, शुभ भावनाओं के उदय से आत्मविश्वास बढ़ेगा, मान-सम्मान युक्त कार्य पूरा होगा, गृहस्थ जीवन में मधुरता, राजकीय पक्ष से सहयोग।	पारिवारिक उत्तरदायित्व की पूर्ति, विनियोजित धन का प्रसिद्धि आगानुकूल प्राप्त, दूसरों के आशवासन से मानसिक राहत, आमोद-प्रमोद के सुख लुप्त होगे।	धरतु समयाओं से विहित, धन का अभाव, किसी मुद्दे पर तनाव, दूसरों की गलतफहमी के शिकार, पारस्परिक संबंधों में मनमुटाप, प्रतियोगिता में विफलता की आशंका।
तुला	वृश्चिक	धनु
पुत्री का प्रसन्न आशानुकूल, नौकरी में पदोन्नति, पारिवारिक उत्तरदायित्व की पूर्ति, परोपकार की भावना जागृत, निजी जिंजीगी में नवीन उपस्थिति हासिल होने की ओर।	कारोबार में लो कर्माए धन की प्राप्ति, यश-मान प्रसिद्धि परकर कृत्य संपन्न, आपसी सलाह से कामयाबी मिलने की ओर, विवाहाधीन योजना मंजूरपक्ष में परिणित।	किसी योजना की शुरुआत हेतु प्रयासशील, आय के नवीन स्रोत, स्वयं परिवर्तन का कार्यक्रम उपस्थित, आहार-विकार में नवीनता, दर्शनीय स्थलों की यात्रा में मन प्रफुल्लित।
मकर	कुंभ	मीन
अधुरी योजना प्रगति पर, धरतु वातावरण सुखद, परोपकार की भावना जागृत, सुसंदेश मिलने से सुखी, दर्शनीय स्थलों की यात्रा का प्रसंग, उत्तरदायित्व की पूर्ति भी।	लाभ का सुअवसर, अधीनस्थ सहयोगियों से सहयोग, भौतिक सुख के साधन सुलभ, जन कल्याण की ओर रुझान, संकेत पद की प्राप्ति, उपस्थित व्यवधान समाप्त, यात्रा भी।	मित्रों के सहयोग से कार्य संपन्न, मित्रों की ओर, वाद-विवाद का समापन पक्ष में, प्रेम संबंधों में प्रगति, राजकीय पक्ष से सहयोग, आमोद-प्रमोद के साधन सुलभ।

सुडोकू	सुडोकू- कल का उत्तर																																																																																																																											
<table border="1"> <tr><td>6</td><td></td><td>8</td><td></td><td>2</td><td></td></tr> <tr><td></td><td></td><td>3</td><td>6</td><td>8</td><td></td></tr> <tr><td>9</td><td></td><td>4</td><td></td><td>7</td><td></td></tr> <tr><td>2</td><td>3</td><td>1</td><td></td><td>6</td><td></td></tr> <tr><td>5</td><td></td><td>7</td><td>6</td><td>1</td><td></td></tr> <tr><td>3</td><td>5</td><td>9</td><td>2</td><td></td><td>6</td></tr> <tr><td>1</td><td></td><td></td><td>9</td><td></td><td>3</td></tr> </table>	6		8		2				3	6	8		9		4		7		2	3	1		6		5		7	6	1		3	5	9	2		6	1			9		3	<table border="1"> <tr><td>9</td><td>2</td><td>6</td><td>8</td><td>1</td><td>7</td><td>5</td><td>4</td><td>3</td></tr> <tr><td>4</td><td>1</td><td>8</td><td>5</td><td>9</td><td>3</td><td>6</td><td>7</td><td>2</td></tr> <tr><td>5</td><td>7</td><td>3</td><td>2</td><td>6</td><td>4</td><td>9</td><td>1</td><td>8</td></tr> <tr><td>2</td><td>6</td><td>4</td><td>7</td><td>8</td><td>1</td><td>3</td><td>9</td><td>5</td></tr> <tr><td>8</td><td>3</td><td>7</td><td>5</td><td>9</td><td>2</td><td>4</td><td>6</td><td>1</td></tr> <tr><td>1</td><td>5</td><td>9</td><td>3</td><td>4</td><td>6</td><td>8</td><td>7</td><td>2</td></tr> <tr><td>6</td><td>4</td><td>2</td><td>1</td><td>3</td><td>8</td><td>7</td><td>5</td><td>9</td></tr> <tr><td>3</td><td>9</td><td>1</td><td>4</td><td>7</td><td>5</td><td>2</td><td>8</td><td>6</td></tr> <tr><td>7</td><td>8</td><td>5</td><td>6</td><td>2</td><td>9</td><td>1</td><td>3</td><td>4</td></tr> </table>	9	2	6	8	1	7	5	4	3	4	1	8	5	9	3	6	7	2	5	7	3	2	6	4	9	1	8	2	6	4	7	8	1	3	9	5	8	3	7	5	9	2	4	6	1	1	5	9	3	4	6	8	7	2	6	4	2	1	3	8	7	5	9	3	9	1	4	7	5	2	8	6	7	8	5	6	2	9	1	3	4
6		8		2																																																																																																																								
		3	6	8																																																																																																																								
9		4		7																																																																																																																								
2	3	1		6																																																																																																																								
5		7	6	1																																																																																																																								
3	5	9	2		6																																																																																																																							
1			9		3																																																																																																																							
9	2	6	8	1	7	5	4	3																																																																																																																				
4	1	8	5	9	3	6	7	2																																																																																																																				
5	7	3	2	6	4	9	1	8																																																																																																																				
2	6	4	7	8	1	3	9	5																																																																																																																				
8	3	7	5	9	2	4	6	1																																																																																																																				
1	5	9	3	4	6	8	7	2																																																																																																																				
6	4	2	1	3	8	7	5	9																																																																																																																				
3	9	1	4	7	5	2	8	6																																																																																																																				
7	8	5	6	2	9	1	3	4																																																																																																																				

आइ, खड़े व 3x3 के वर्ग में 1 से 9 तक के अंक इस प्रकार भरें कि किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो। पहले ही के एक से अधिक हल हो सकते हैं।

विक्रमी संवत् 2081, शके 1946, पूर्व दक्षिणावण, शरद ऋतु, मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष की दशमी तत्परचात एकादशी, चित्रा नक्षत्र तत्परचात स्वाती नक्षत्र, अतिगण्ड योग तत्परचात सुकामा योग, चन्द्रमा तुला राशि में विद्यमान।

राहुकाल: दोपहर 12:21 से 01:39 बजे तक।

हरियाणा गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी के चुनाव में राजिंद्र सिंह लक्की हांडीखेड़ा ने पहला नामांकन पत्र भरा

झंडा गुप में सदस्य आजाद उम्मीदवार बनकर चुनाव मैदान में



के साथ रहे जेल भी काटी लाठी चार्ज भी हुए अब झंडा गुप से टिकट लेने वालों में होड़ मची हुई है

साहा, दिसंबर : हरियाणा गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी का चुनाव हरियाणा में पहली बार होने जा रहा है इस चुनाव को लेकर हरियाणा की सिख संगत में काफी उत्साह है इस चुनाव में जिला अंबाला के नारायणगढ़ सीट से सबसे पहला नामांकन पत्र राजिंद्र सिंह लक्की गांव हांडीखेड़ा ने आजाद उम्मीदवार के रूप में भरा वे काफी उत्साहित दिखे 28 साल के युवा राजिंद्र लक्की बीकॉम ग्रेजुएट है एनसीसी कैडेट है सोशल वर्किंग करते हैं और सी एस सी सेंटर चलाते हैं। और सिख मसलो पर एक्टिव रहते हैं। उन्होंने बताया कि हरियाणा की कमेटी के लिए गांव हांडीखेड़ा और इलाके की संगत ने जगदीश सिंह खिंडा के नेतृत्व में 22 साल से ज्यादा लंबे समय तक संघर्ष किया उनके गांववासी हर धरने प्रदर्शन में झंडा साहब

वे टिकट वितरण कमेटी से भी मिले कुछ सदस्यों ने हमें अभी बच्चे कहकर संबोधित किया जिससे वे मायूस हुए इसलिए गांव और इलाके की संगत से सलाह करके उन्होंने आजाद प्रत्याशी के रूप में अपना नामांकन भर दिया और दावा किया कि मैं और हमारे साथी मिलकर संघर्ष करेंगे इस सीट को जीतकर दिखाएंगे यह भी कहा कि आजाद जीतकर भी हमारा समर्थन झंडा साहब को रहेगा क्योंकि उनके संघर्ष के कारण ही यह कमेटी होद में आई है इसीलिए आज हरियाणा की संगत यह चुनाव लड़ पा रहे हैं यदि वे संघर्ष ना करते तो हरियाणा की अपनी कमेटी ना बन पाती तो फिर कोई चुनाव कैसे लड़ सकता था उनका बतना है उन्होंने इलाके की संगत को

वीर बाल दिवस पर जीजी ओपन स्कूल ने केक काटकर मनाया मिस नित्या अग्रवाल का जन्मदिन



बेटी के जन्मदिन पर छात्रों को बैग वितरित करते अनुभव अग्रवाल व साथ में बेटी मिस नित्या अग्रवाल

अंबाला शहर, दिसम्बर : वीर बाल दिवस और नए साल 2025 के जश्न का आयोजन जीजी ओपन स्कूल (अम्बाला छावनी) द्वारा किया गया था। मुख्य अतिथि अनुभव अग्रवाल (सुदर्शन परिवार के अध्यक्ष) अपने परिवार के सदस्यों कुसुमलता अग्रवाल (संस्थापक सुदर्शन परिवार), प्रिया अग्रवाल, नित्या अग्रवाल, भारती लांबा और श्याम रानी के साथ इस अवसर को सुशोभित करने के लिए उपस्थित थे, साथ साथ उनकी पुत्री नित्या अग्रवाल का जन्म दिन भी स्कूल में मनाया गया। छात्रों द्वारा चार साहिबजादों और माता गुजरी जी की याद में सुंदर नृत्य प्रदर्शन, कविता, श्लोक और मधुर गीत प्रस्तुत किए गए। जीजी ओपन स्कूल ने अनुभव अग्रवाल की पुत्री मिस नित्या अग्रवाल के जन्मदिन को केक काट कर मनाया। प्रिंसिपल सुजिता गुप्ता एवं अन्य स्टाफ ने नित्या को अपने वाले वर्षों में अच्छे स्वास्थ्य की देरी शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद दिए और बेटी को कहा कि भगवान आपको जीवन में सफलता प्रदान करें। इस अवसर पर बच्चों को बैग, जीमेट्री बॉक्स, खाद्य पदार्थ और नोटबुक रचनात्मकता और आनंद की भावना से भरपूर था, जो सभी को एक साथ इस खुशी के मौके को साझा करने का अवसर प्रदान करता है। कार्यक्रम की शुरुआत ईसा मसीह के जन्म से संबंधित और विश्व पूजिता तुलसी पर एक स्पीच के द्वारा की गई। इसके पश्चात किडगार्डन के छोटे-छोटे बच्चों ने रंग-बिरंगे परिधानों में सज कर और सुंदर-सुंदर क्रिसमस गीतों पर नृत्य किया और सबका मनमोहन किया। इस अवसर पर कक्षाओं में भी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। जिसमें सेंटा, सेंटा हाउस, क्रिसमस ट्री, स्नोमैन, क्रिसमस बेल्स, क्रिसमस फेरी, डिजर आदि बनाए गए। अंत में प्रधानाचार्य ने कार्यक्रम के समापन पर स्कूल की एक्टिविटी इंचार्ज पारुल यादव और सभी अध्यापिकाओं और बच्चों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वह महोत्सव केवल क्रिसमस का उत्सव नहीं बल्कि बी.पी.सी. जैन स्कूल की गम्प जोशी और एकता का उत्सव है। इसी के साथ बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्होंने सभी को क्रिसमस और तुलसी पूजन दिवस की बधाई दी।

बी.पी.सी जैन पब्लिक स्कूल में मनाया क्रिसमस और तुलसी पूजन दिवस



कार्यक्रम के दौरान प्रधानाचार्य के साथ विद्यार्थी।

कार्यक्रम में ईसा मसीह के जन्म से संबंधित और विश्व पूजिता तुलसी पर बच्चों ने दी स्पीच

अम्बाला छावनी, दिसंबर : बी.पी.सी जैन पब्लिक स्कूल में क्रिसमस और तुलसी पूजन दिवस के अवसर पर छात्रों और शिक्षकों ने मिलकर सालाना क्रिसमस और तुलसी पूजन दिवस का त्योहार धूमधाम से मनाया। यह कार्यक्रम रचनात्मकता और आनंद की भावना से भरपूर था, जो सभी को एक साथ इस खुशी के मौके को साझा करने का अवसर प्रदान करता है। कार्यक्रम की शुरुआत ईसा मसीह के जन्म से संबंधित और विश्व पूजिता तुलसी पर एक स्पीच के द्वारा की गई। इसके पश्चात किडगार्डन के छोटे-छोटे बच्चों ने रंग-बिरंगे परिधानों में सज कर और सुंदर-सुंदर क्रिसमस गीतों पर नृत्य किया और सबका मनमोहन किया। इस अवसर पर कक्षाओं में भी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। जिसमें सेंटा, सेंटा हाउस, क्रिसमस ट्री, स्नोमैन, क्रिसमस बेल्स, क्रिसमस फेरी, डिजर आदि बनाए गए। अंत में प्रधानाचार्य ने कार्यक्रम के समापन पर स्कूल की एक्टिविटी इंचार्ज पारुल यादव और सभी अध्यापिकाओं और बच्चों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वह महोत्सव केवल क्रिसमस का उत्सव नहीं बल्कि बी.पी.सी. जैन स्कूल की गम्प जोशी और एकता का उत्सव है। इसी के साथ बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्होंने सभी को क्रिसमस और तुलसी पूजन दिवस की बधाई दी।

ब्रेन वेव पब्लिक स्कूल नहौनी में वार्षिक खेल दिवस समारोह

प्री नर्सरी से लेकर सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक खेल प्रतियोगिताओं में लिया भाग



खेल प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थियों के साथ अध्यापक।

साहा, दिसम्बर : ब्रेन वेव पब्लिक स्कूल नहौनी में वार्षिक खेल दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर चेयरमैन इंद्रराज कुमार, मैनेजर रमणीक कुमार व प्रिंसिपल डा. सुनीता कुमार उपस्थित थे। जिन्होंने दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। कार्यक्रम की शुरुआत बच्चों द्वारा महाशाल जलकर की गई। सबसे पहले प्रलेक खेलकूद में भाग लेने वाले सभी खिलाड़ियों ने मार्च पास्ट किया। चेयरमैन इंद्रराज कुमार ने सलामी ली इसके बाद खेल शुरू हुए। बच्चों द्वारा

और एकाग्रता के साथ सक्रिय रहता है। प्रिंसिपल डा. सुनीता कुमार ने बताया स्कूल में विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ खेल की सुविधाएँ भी दी जाती हैं। शारीरिक शिक्षा बच्चों और बड़ों सबके जीवन में आत्मविश्वास और प्रेरणा लाता है। इसलिए प्रतिवर्ष हम अपने विद्यार्थियों को वार्षिक खेल दिवस आयोजित करते हैं ताकि बच्चे अपने खेल के कौशल को और विकसित कर सकें। अंत में सभी विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। कक्षा छठी रोज, सातवाँ लोटस व आठवाँ रोज खो-खो के खेल में विजयी रहे। कबड्डी में छठी, सातवाँ व आठवाँ लोटस सेक्शन की टीमें विजयी रही। अध्यापकों की प्रतियोगिता में प्रथम सुवर्णर मैम, द्वितीय अंजलि मैम व तृतीय सरबजीत मैम रही व कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीयगान द्वारा किया गया

सेवा समिति गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल के प्रांगण में रंगोली कार्यक्रम

अम्बाला छावनी, दिसंबर : सेवा समिति गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल के प्रांगण में माहामा पंडित मदन मोहन मालवीय के जन्मोत्सव के उपलक्ष में चतुर्थ चरण में रंगोली कार्यक्रम का आयोजन विद्यालय की प्रधानाचार्या मामला गुप्ता की अध्यक्षता में संपन्न किया गया। इस

साहिबजादों के बलिदान दिवस पर केसर दूध का लंगर लगाया

बराड़ा, दिसंबर : गुरु गोविंद सिंह जी के चार साहिबजादों की अमर शहादत को नमन करते हुए बलिदान दिवस पर आर्मी कैटिन की ओर से केसर दूध का लंगर लगाया गया। इस सेवा में राहगीरों और स्थानीय लोगों ने बड़ी श्रद्धा के साथ प्रसाद ग्रहण किया। पौष माह में गुरु गोविंद सिंह जी के साहिबजादों की शहादत की स्मृति में विभिन्न स्थानों पर लंगर और कौतन दरबार का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर लोगों ने उनकी शहादत को याद करते हुए श्रद्धा व्यक्त की। गौरतलब है कि आर्मी कैटिन समाजसेवा में सदैव सक्रिय रहती है। गर्मियों में ठंडे पानी की छछील और अब सर्दियों में केसर दूध का लंगर आयोजित कर सेवा भाव को बढ़ावा दिया जा रहा है।

भारत में नशा आतंकवाद से भी ज्यादा फन फैला रहा है : वीरेश शांडिल्य

नशे के खिलाफ सामूहिक जनआंदोलन की जरूरत : शांडिल्य



अंबाला, दिसंबर : भारत में नशा आतंकवाद से भी ज्यादा फन फैला रहा है और इसके पीछे सीधे तौर पर पाकिस्तान की साजिश है जिसको लेकर देश के गृह मंत्री अमित शाह बड़ा फैसला लें उपरोक्त शब्द एंटी टेरोरिस्ट फ्रंट इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष वीरेश शांडिल्य ने कहे। साजिश शांडिल्य पंजाब के तीन बार कैबिनेट मंत्री रहे डॉ. हरबंस लाल द्वारा रखे नशे के खिलाफ अग्रणी सेमीनार में कहा कि नशा आज मात्र शांडिल्य पंजाब के तीन बार कैबिनेट मंत्री रहे डॉ. हरबंस लाल द्वारा साहिबजादों की याद में नशे के विरुद्ध रखे सेमीनार में मुख्यअतिथि के रूप में पहुंचे जहां उन्होंने सबसे पहले साहिबजादों को श्रद्धांजलि दी और कहा कि गुरु तेग बहादुर और गुरु गोविंद सिंह की कुर्बानियों के कारण आज ब्राहमण समाज व सनातन धर्म जंदा है। वीरेश शांडिल्य ने पंजाब सरकार में तीन बार कैबिनेट मंत्री रहे डॉ. हरबंस लाल द्वारा रखे नशे के खिलाफ अग्रणी सेमीनार में कहा कि नशा आज मात्र शांडिल्य पंजाब के तीन बार कैबिनेट मंत्री रहे डॉ. हरबंस लाल द्वारा साहिबजादों की याद में नशे के विरुद्ध रखे सेमीनार में मुख्यअतिथि के रूप में पहुंचे जहां उन्होंने सबसे पहले साहिबजादों को श्रद्धांजलि दी और कहा कि गुरु तेग बहादुर और गुरु गोविंद सिंह की कुर्बानियों के कारण आज ब्राहमण समाज व सनातन धर्म जंदा है। वीरेश शांडिल्य ने पंजाब सरकार में तीन बार कैबिनेट मंत्री रहे डॉ. हरबंस लाल द्वारा रखे नशे के खिलाफ अग्रणी सेमीनार में कहा कि नशा आज मात्र शांडिल्य पंजाब के तीन बार कैबिनेट मंत्री रहे डॉ. हरबंस लाल द्वारा साहिबजादों की याद में नशे के विरुद्ध रखे सेमीनार में मुख्यअतिथि के रूप में पहुंचे जहां उन्होंने सबसे पहले साहिबजादों को श्रद्धांजलि दी और कहा कि गुरु तेग बहादुर और गुरु गोविंद सिंह की कुर्बानियों के कारण आज ब्राहमण समाज व सनातन धर्म जंदा है।

डोर टू डोर कूड़ा उठान न होने पर वार्ड न. 2 के पार्षद नरेन्द्र शर्मा ने अपने खर्चे पर कूड़ा का उठान किया



वार्ड न. 2 से कूड़ा उठाती ट्रैक्टर ट्राली व जानकारी देते पार्षद नरेन्द्र शर्मा।

नारायणगढ़ : नगरपालिका नारायणगढ़ में डोर टू डोर कूड़ा उठाने का ट्रेंडर समाप्त हुए लगभग एक सप्ताह बीत चुका है और शहर के लोगों के लिए कूड़ा निपटान की समस्या एक बार फिर मुसीबत बन गई है,लेकिन अधिकारी नहीं ले रहे सुध। इसी समस्या को देखते हुए वार्ड नंबर 2 के पार्षद नरेन्द्र देव शर्मा अपने वाडवाकियों को राहत पहुंचाने के लिए एक बार फिर से निजी खर्च पर ट्रैक्टर ट्राली लगा कर मैदान में उतर गये हैं और घर घर से कूड़ा उठाने का काम किया। बता दें कि स्थानीय नगरपालिका में डोर टू डोर कूड़ा उठाने का ट्रेंडर 18 दिसंबर को समाप्त हो गया है जिससे घरों से कूड़ा उठाने का कार्य रुक गया है शहर में कूड़े के अम्बार लग गए हैं कूड़ा न उठाने से लोगों का जीना मुहाल हो गया है। यहां यह भी काबिले जिक्र है कि इससे पहले भी इसी तरह के हालात पैदा होने पर नरेन्द्र देव शर्मा ने इसी तरह ट्रैक्टर ट्राली लगा कर लोगों की मुसीबत को कुछ कम करने का प्रयास करते हुये अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन किया था पार्षद नरेन्द्र देव शर्मा ने स्थानीय व जिला प्रशासन से मांग की है कि लोगों की परेशानी को देखते हुए तुरंत डोर टू डोर का ट्रेंडर लगाया जाये व प्रक्रिया पूरी होने तक वैकल्पिक व्यवस्था की जाए।

सी-लाल चेरिटेबल ट्रस्ट ने 100 जोड़ी जूते, जूराबें व टोपियां जरुरतमंद बच्चों को बांटी



जरुरत मंद बच्चों के साथ चमन लाल गुप्ता व संजीव गुप्ता।

अंबाला शहर : केपीए के महाविद्यालय में प्रधानाचार्या रेखा गोयल भागी की अध्यक्षता में सी-लाल चेरिटेबल ट्रस्ट से चमन लाल गुप्ता व संजीव गुप्ता ने सर्दी से बचाव के लिए जरूरतमंद बच्चों को करीब 100 जोड़ी जूते, जूराबें व टोपियां वितरित की गईं। ताकि ठंड में बच्चों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। प्रधानाचार्या रेखा गोयल भागी ने सी-लाल चेरिटेबल ट्रस्ट के चमन लाल गुप्ता व संजीव गुप्ता का आभार व्यक्त करते हुए इस नैक काम के लिए उन्हें धन्यवाद किया।

राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस के उपलक्ष्य में स्लोगन प्रतियोगिता

अंबाला शहर : देव समाज कॉलेज फॉर गर्ल्स अंबाला शहर में एन एस एस विभाग द्वारा राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस मनाया गया, जिसमें स्लोगन बनाने की प्रतियोगिता रखी गई। राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस हर साल 24 दिसंबर को मनाया जाता है, जो उपभोक्ताओं के अधिकारों और उनकी सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए समर्पित है, इस दिन भारतीय उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 को लागू किया गया था, जो उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों की रक्षा करता है। प्राचार्या मुक्ता अरोड़ा ने वालंटियर्स को अपने उपभोक्ता के रूप में जागरूक रहने और अपने अधिकारों के प्रति सजग रहने का संदेश दिया।निर्णायक की भूमिका प्रोफेसर सुखदीप कौर और प्रोफेसर एकता शर्मा ने निभाई। परिणाम इस प्रकार रहा:- नमन (बी. ए.) प्रथम,प्रीत कौर (बी. कॉम) द्वितीय और गुरजीत कौर (बी. ए.) तृतीय रही। कार्यक्रम का संयोजन एन एस एस प्रथमी प्रोफेसर पूनम रानी द्वारा किया गया।

द.एस.डी. विद्या स्कूल ने हर्षोल्लास से मनाया क्रिसमस

कार्यक्रम में सांता वलॉज ने बच्चों को उपहार बांटे

अम्बाला छावनी, दिसंबर : द. एस. डी. विद्या स्कूल के कक्षा आठवीं के छात्रों ने एस. डी. कॉलेज में क्रिसमस का त्योहार बड़े जोश और उमंग के साथ मनाया। यह आयोजन रचनात्मक प्रतिभा और क्रिसमस की सच्ची भावना का एक जीवंत प्रदर्शन था।इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पास्टर जस्टिस विश्वास का विद्यालय की निर्देशक प्राचार्या नीलदंजोत कौर संघू द्वारा गर्मजोशी से स्वागत किया गया। अन्य अतिथियों में डॉ. नवीन गुलाटी (पूर्व गणित विभागाध्यक्ष, एस डी कॉलेज), वंदना मेहता (सीनियर और उदासी मिडिल विंग निर्देशक), शिक्षक, छात्र और अभिभावक उपस्थित थे। समारोह की शुरुआत ऑर्केस्ट्रा की मनमोहक धुनों के साथ हुई, जिसने पूरे माहौल को उत्सवमय बना दिया। मनमोहक नृत्य प्रस्तुतियों और एक अंग्रेजी कविता ने कार्यक्रम को और अधिक मनोरंजन बना दिया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण सांता वलॉज का आगमन रहा, जिन्होंने बच्चों को उपहार बांटे और सभी के चेहरों पर मुस्कान लाने में कामयाब रहे। कक्षा 8 के छात्रों ने एक चैरिटी ड्राइव का भी आयोजन किया, जिसमें जरूरतमंद बच्चों के लिए उपहार और आवश्यक वस्तुएं जुटाने की अपील की गई, जो इस त्योहार की सच्ची भावना,दया और उदारता को दर्शाती है। इस अवसर पर अडासी बंसल के अभिभावक और अनुप बंसल



अभिभावक को सबसे सहायक अभिभावक होने का पुरस्कार देते हुए प्राचार्या नीलदंजोत कौर संघू। को सबसे सहायक अभिभावक होने का पुरस्कार दिया गया।प्राहमरी विंग निर्देशक और टाइटलर विंग की समन्वयक अनुरूप जौहल के मार्गदर्शन में प्री-केजी से कक्षा 5 तक के छात्रों ने भी क्रिसमस के त्योहार को मनाने में उत्साहपूर्वक भाग लिया।



अखिल भारतीय अति पिछड़ा कपूर्ती एकता मंच

बगीचा रेस्टोरेंट में बुद्ध नोनिया एवं भीमा मल्लाह का शहादत दिवस मनाया गया।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क) बेतिया। अखिल भारतीय अति पिछड़ा कपूर्ती एकता मंच सह वाम सेफ के तत्वाधान में बगीचा रेस्टोरेंट में शहीद बुद्ध नोनिया एवं शहीद भीमा मल्लाह का शहादत दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व विधान पार्षद रामबली सिंह चंद्रवंशी एवं बौद्ध महासभा के संरक्षक रविंद्र सिंह बौद्ध के नेतृत्व में दीप प्रज्वलित किया गया। मुख्य अतिथि पर्व पर विधान पार्षद रामबली सिंह चंद्रवंशी ने कहा कि 1930 में नमक सत्याग्रह में शहीद बुद्ध नोनिया को नमक के खोलते काडाह हमें डाल दिया गया। उनकी शहादत को याद करते हुए उन्होंने कहा कि अति पिछड़ा वर्ग को अपने हक की



लड़ाई को एकजुट होकर लड़ना होगा। हम अपनी एकता के बल पर अपना हक ले

करेंगे। इस सम्मेलन के माध्यम से मांग करते हैं कि बुद्ध नोनिया एवं भीमा मल्लाह के नाम

को इतिहास से जोड़ा जाए। हमारी यह लड़ाई बगीचा रेस्टोरेंट से शुरू हुई है और पूरे बिहार में यह आवाज गुंजेगी। बाबा साहेब का संविधान सबके लिए है। इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित कार्यकर्ताओं को एक कैलेंडर भगवान बुद्ध के नाम से समर्पित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सेवानिवृत्त शिक्षक गोरख चौहान कार्यक्रम का संचालन राम नोनिया ने किया। कार्यक्रम को संबोधन करने वालों में प्रबुद्ध भारती के राष्ट्रीय संयोजक विजय कश्यप जन सुराज के कृष्ण कुमार बिंद राघवेंद्र पाठक रश्मि राव तथा अति पिछड़ा वर्ग के राजेश्वर महतो अभिलाष महतो आनंद किशोर एवं सिकंदर राम शामिल रहे।

बेतिया में रेड क्रॉस द्वारा अग्नि पीड़ितों के बीच में राहत सामग्री बांटा गया

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

पश्चिम चंपारण। भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी, जिला शाखा, बेतिया द्वारा दो प्रखंडों के 1-1 अग्नि पीड़ितों के बीच रेड क्रॉस भवन में राहत सामग्री का वितरण किया गया। वितरण कार्यक्रम का नेतृत्व कर रहे चेयरमैन डॉ. सुशील प्रसाद चौधरी, सचिव डॉ. जगमोहन कुमार, कोषाध्यक्ष रजत कुमार तौदी, संयुक्त सचिव जगदेव प्रसाद ने बताया कि मझौलिया प्रखंड के रमपुरवा महनवा के चानसी सहनी एवं नौतन प्रखंड के नौतन दुबे के लालबाबू भगत के घर में विगत दिनों अगलगी हुई थी। दोनों पीड़ितों द्वारा राहत सामग्री के लिए रेड क्रॉस



को दिए गए आवेदन के आधार पर राहत सामग्री के रूप में तिरपाल, किचन सेट, हाईजीन कोट, कंबल, बाल्टी आदि प्रदान किया गया है। वितरण कार्यक्रम में प्रबंध समिति सदस्य सैयद शकील अहमद व

लालबाबू प्रसाद, आजीवन सदस्य बिहारी लाल प्रसाद उर्फ लाल दरोगा महतो, आदित्य कुमार, गंगा सागर, स्वयंसेवक प्रगति गुप्ता व इमरान कुरेशी, कर्मा मधुरेन्द्र चौबे व अजय राउत उपस्थित रहे।

आज से शुरू होगा 6 वां राज्य स्तरीय फुटबॉल महा संग्राम

उदघाटन मैच बरेली मंडल तथा लखनऊ की टीमों के बीच होगा मुकाबला

कालपी-उई। मंगलवार को टूर्नामेंट की पूर्व फुटबॉलरों की मौजूदगी में प्रबंध समिति की आयोजित बैठक में भारतीय संविधान के निर्माता बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की स्मृति में आयोजित होने वाले फुटबॉल महासंग्राम के कार्यक्रम की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। 25 दिसंबर को उदघाटन मैच शाहजहांपुर बरेली मंडल तथा लखनऊ की टीमों के बीच खेला जायेगा। एम एस वी इंटर कालेज कालपी में आयोजित प्रेस वार्ता में जानकारीयां देते हुये विधालय के प्रबंधक एवं टूर्नामेंट के संरक्षक डॉ नरेश मैहर तथा समिति के अध्यक्ष जगजीवन अहिरवार ने बताया कि बुदेलखंड बॉर्डर फुटबॉल क्लब कालपी के तत्वाधान में छठवां राज्य स्तरीय फुटबॉल महासंग्राम का आयोजन 25 दिसंबर से 29 दिसंबर तक किया जायेगा। टूर्नामेंट में क्रीड़ा विभाग में पंजीकृत टीमों कानपुर, शाहजहांपुर, लखीमपुर, लखनऊ स्पोर्ट्स, मऊनाथ भोजन, झांसी रेलवे, बुदेलखंड बॉर्डर कालपी सहित विभिन्न जगह की टीम तथा महाशूर खिलाड़ी मैदान में अपनी प्रतिभा को दिखाएंगे। फुटबाल टूर्नामेंट कार्यक्रम के संयोजक नगर पालिका परिषद कालपी के पूर्व अध्यक्ष प्रतिनिधि जगजीवन अहिरवार ने बताया कि उत्तर प्रदेश फुटबॉल संघ के द्वारा मान्यता प्राप्त संगठन बुदेलखंड बॉर्डर फुटबॉल क्लब कालपी के द्वारा प्रत्येक वर्ष फुटबॉल महासंग्राम का आयोजन किया जाता है। इस साल भी एम सी इंटर कॉलेज के ग्राउंड में 25 दिसंबर को टूर्नामेंट का उदघाटन किया जाएगा। 29 दिसंबर को फाइनल मैच खेला जाएगा। संस्था के सदस्यों की मौजूदगी में आयोजित बैठक में फुटबॉल महासंग्राम की तैयारियों को लेकर के अंतिम रूप दिया गया। फुटबॉल महासंग्राम में हिस्सा लेने के लिए तमाम विख्यात टीमों की सहमति मिल चुकी है। फुटबॉल मैच के उदघाटन तथा समापन समारोह के लिए जनप्रतिनिधियों तथा उच्च अधिकारियों से संपर्क भी किया जा रहा है। जगजीवन अहिरवार के मुताबिक कालपी में फुटबॉल मैच को लेकर मैदान को सजाया गया है। जनता की भावनाओं के अनुरूप इस वर्ष भी 6 वां राज्य स्तरीय फुटबॉल संग्राम बहुत ही विशाल स्तर पर संपन्न कराया जाएगा। टूर्नामेंट को दृष्टिगत रखते हुए एम एस वी इंटर कॉलेज के ग्राउंड में व्यापक सजावट की गई है। वही पुलिस प्रशासन के द्वारा सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जायेंगे।



जल कर खराब हो गया। आग लगने के कारण घर गृहस्थी का सामान जलने के कारण पीड़ित परिवार पेशान हैं तथा उसके सामने फिलहाल जीवन यापन की समस्या पैदा हो गयी है। पीड़ित ने आग लगने के कारण हुई क्षति की सूचना कोतवाली पुलिस व एलईडी टीवी, बैड, पंखा के साथ घर गृहस्थी का सामान जल गया है। आग को बुझाने का आसपास के लोगों ने प्रयास किया किन्तु तब तक लगभग डेढ़ लाख का सामान

बारिश के साथ पूरे दिन धूप न निकलने के कारण ठिठुरन बढ़ी

■ जालौन-उई

तापमान लगातार नीचे जा रहा है। तापमान खिसक कर 8 डिग्री सेल्सियस तक आ पहुंचा गया है तथा शीत लहर चल रही है। मंगलवार को बारिश के साथ पूरे दिन धूप न निकलने के कारण ठिठुरन बढ़ती ही जा रही है। सर्दियों के शुरू होने के बाद भी नगर व ग्रामीण क्षेत्र में अभी तक अलाव की व्यवस्था नहीं की गयी है। अलाव की कम्बल के अभाव निर्धन लोगों शीत लहर में ठिठुरने के लिए मजबूर है। निर्धन बेसहारा लोगों के साथ राहगीरों को ठंड से बचाव प्रशासन द्वारा अलाव जलवाये जा रहे हैं किन्तु उनकी संख्या बहुत कम है। इसके साथ ही प्रशासन के साथ धनवान लोगों द्वारा लोगों का निशुल्क कम्बल का वितरण किया जाता है। सर्दी का मौसम शुरू हो गया है। तापमान 8 डिग्री तक पहुंच गया है तथा शीत लहर चल रही है। मंगलवार को सुबह बारिश हो गयी। बारिश होने के साथ पूरे दिन धूप नहीं निकली जिसके चलते ठिठुरन बढ़ गयी है। सर्दी में लोग ठिठुरने के लिए मजबूर है। इसके बाद भी अभी तक न तो प्रशासन ने नगर व ग्रामीण क्षेत्र में निर्धन बेसहारा लोगों को कम्बल बांटना शुरू किया है और न ही अलाव जलाना शुरू किया है। हालांकि नगर

पालिका परिषद द्वारा कार्यालय परिसर में खुले आसमान के नीचे यापन करने वालों के लिए रैन बसेरा बना दिया है। इसमें आने वाले लोगों को ठहरने की उचित व्यवस्था कर दी गयी है। बाजार में अलाव की व्यवस्था न होने के कारण दुकानदारों के साथ बाजार आने वाले ग्रामीण भी ठंड से ठिठुरने को मजबूर हैं। समाजसेवी रहस नाना, सुबोध प्रजापति, अखिलेश लाक्षाकार, गोपाल शरण मिश्रा, सुनील त्रिपाठी, प्रदीप परिहार कच्छू ने जिलाधिकारी से नगर व ग्रामीण क्षेत्र में अलाव जलवाने व कम्बल वितरित कराने की मांग की है।

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी 100वीं जयंती पर सत्याग्रह रिसर्च फाउंडेशन, मदन ताहिरा चैरिटेबल ट्रस्ट ने सरकार से पश्चिम चंपारण में विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रीय संग्रहालय की स्थापना की पुनः की मांग।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय की 163 वीं जयंती।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी 100वीं जयंती पर सत्याग्रह रिसर्च फाउंडेशन, मदन ताहिरा चैरिटेबल ट्रस्ट ने सरकार से पश्चिम चंपारण में विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रीय संग्रहालय की स्थापना की पुनः की मांग।

चंपारण। काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय की 163वीं जयंती एवं भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी 100वीं जयंती पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वक्ताओं ने सरकार से पुनः मांग करते हुए कहा कि बेतिया पश्चिम चंपारण में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक सह चंपारण सत्याग्रह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले पंडित मदन मोहन मालवीय के सम्मान में बेतिया पश्चिम चंपारण में विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रीय संग्रहालय का निर्माण किया जाए। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय शांति राजदूत सह सचिव सत्याग्रह रिसर्च फाउंडेशन डॉ

एजाज अहमद अधिवक्ता, डॉ शाहनवाज अली, डॉ अमित कुमार लोहिया वरिष्ठ पत्रकार सह संस्थापक मदन ताहिरा चैरिटेबल ट्रस्ट डॉ अमानुल हक ने संयुक्त रूप से कहा कि पंडित मदन मोहन मालवीय का जन्म आज ही के दिन 25 दिसंबर 1861 को हुआ था। वे भारत के पहले और अंतिम व्यक्ति थे जिन्होंने महामना की सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया गया था। पत्रकारिता, वकालत, समाज सुधार, मातृभाषा और भारत माता की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले इस महान व्यक्ति द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय में उनका विजन ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षित कर देश की सेवा के लिए तैयार करना था



जो देश का नाम रोशन कर सकें। मालवीय जी सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, देशभक्ति और आत्मत्याग में अद्वितीय थे। वे अपने व्यवहार में हमेशा मृदुभाषी रहे। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 100वीं वर्ष पूर्व 25 दिसंबर 1924 को हुआ था। वे

एक भारतीय राजनीतिज्ञ और कवि थे। जिन्होंने भारत के 10वें प्रधानमंत्री के रूप में तीन बार कार्य किया, पहली बार 1996 में 13 दिनों की अवधि के लिए चुने गए, फिर 1998 से 1999 तक 13 महीने की अवधि के लिए, उसके बाद 1999 से 2004 तक पूर्ण कार्यकाल के लिए।

बिजली के शार्ट सर्किट से घर में लगी आग

15 हजार रुपए नकद व घर गृहस्थी का सामान जल कर राख

■ जालौन-उई

बिजली के शार्ट सर्किट से घर में आग लग गयी। आग लगने के कारण घर में रखे 15 हजार रुपए नकद व घर गृहस्थी का सामान जल कर राख हो गया है। पीड़ित ने घटना की सूचना पुलिस को दे दी है। कोतवाली क्षेत्र के ग्राम अलाईपुरा निवासी रमजानी मंसूरी पुत्र लखू खां मंगलवार को खेत पर गये थे। घर पर उनकी पत्नी सोनी व चार वर्षीय बेटी शादिया व दो

वर्षीय दुवा घर पर थी। सुबह करीब 11 बजे मां बेटियों को लेकर काम में व्यस्त थी। इसी दौरान बिजली के शार्ट सर्किट से घर में आग लग गयी। आग लगने के कारण घर में रखे 15 हजार रुपए नकद व फ्रिज, कूलर, एलईडी टीवी, बैड, पंखा के साथ घर गृहस्थी का सामान जल गया है। आग को बुझाने का आसपास के लोगों ने प्रयास किया किन्तु तब तक लगभग डेढ़ लाख का सामान

जल कर खराब हो गया। आग लगने के कारण घर गृहस्थी का सामान जलने के कारण पीड़ित परिवार पेशान हैं तथा उसके सामने फिलहाल जीवन यापन की समस्या पैदा हो गयी है। पीड़ित ने आग लगने के कारण हुई क्षति की सूचना कोतवाली पुलिस व लेखपाल को दी है। आग से हुए नुकसान व घर के भरण-पोषण के लिए आर्थिक मदद दिलवाये जाने की मांग की है।

बद्रीप्रसाद महाविद्यालय मे दूसरे दिन कई प्रतियोगिताओं का हुआ आयोजन ससुर की बाइक में दामाद ने लगा दी आग

■ कोंच

सेठ बद्री प्रसाद रूप ऑफ कालेज में युवा महोत्सव और वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं के दूसरे दिन मंगलवार को कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। खेलकूद प्रतियोगिताओं के दूसरे दिन बालिका वर्ग में कुश्ती प्रतियोगिता हुई



जिसमें बीटीसी की छात्रा जाह्नवी सोनी ने जीत हासिल की और अपूर्वा पटेल दूसरे स्थान पर रही। कुश्ती बालक वर्ग में ध्रुव सिंह गुर्जर ने मोहित पाल को पराजित कर दिया। गोला फेंक बालिका वर्ग में अपूर्वा पटेल ने प्रथम और कु.नितिन ने द्वितीय

स्थान हासिल किया। खो खो बालिका वर्ग में सुनाया स्कूल की टीम ने बद्री प्रसाद कॉलेज की टीम को हरा दिया। कबड्डी फाइनल मैच बालक वर्ग में बद्री प्रसाद कालेज की टीम ने आईटीआई बद्री प्रसाद की टीम को पराजित किया। 100 मी.दौड़

तृतीय स्थान पर नव्या रही। वहीं 2 किमी मैराथन दौड़ की शुरुआत समीपस्थ गाँव जुझारपुरा से कॉलेज तक हुई जिसमें बद्री प्रसाद कालेज के छात्र ध्रुव गुर्जर ने प्रथम, सामी इंटर कॉलेज के शिवम पाल ने द्वितीय और बद्री प्रसाद कालेज के ही संजय ने

बालिका वर्ग में सुनाया कि छात्रा ज्योति ने प्रथम और मेधा व कु.नितिन ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान हासिल किया। तृतीय स्थान हासिल किया। रैफरी और निर्णायक की भूमिका में विनय झा, संतोष और वीरेंद्र रहे। संचालन अमन सक्सेना ने किया। कॉलेज के डायरेक्टर आशुतोष हुंका एवं प्राचार्या डॉ सावित्री गुप्ता ने सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया। प्रतियोगिताओं की व्यवस्थाओं में कॉर्डिनेटर कन्हैया नीखर, प्रभारी प्राचार्य बृजेंद्र सिंह, मनोज श्रीवास्तव, प्रतियोगिता संयोजक डॉ सरताज खान, सह संयोजक राघवेंद्र निरंजन, इशांत सिंह, संतोष, सचिन गुर्जर आदि रहे।

■ कोंच

दामाद ने ससुराल में घर के बाहर खड़ी ससुर की बाइक में आग लगा दी। जानकारी के अनुसार थाना रेंडर क्षेत्र के ग्राम करहियापुर निवासी वीरेंद्र सिंह

गुर्जर नगर के मुहल्ला नया पटेलनगर में बाबू पैलैस वाली गली में विजय सिंह कुशवाहा के मकान में किराये से रहते हैं। उनकी पुत्री वर्षा की शादी झांसी जिले के लकारा गाँव निवासी राघव सिंह के साथ करीब 14 साल पहले हुई थी लेकिन बीते कुछ माह से ससुरालीजन उसको प्रताड़ित कर रहे थे और कुछ दिन पहले उसके साथ मारपीट की गयी थी। मारपीट से परेशान होकर वर्षा अपने पिता के पास यहाँ मायके आ गई थी। पी.आरबी व कोतवाली पुलिस ने जांच की। घटना को लेकर वीरेंद्र सिंह ने कोतवाली पुलिस से कार्यवाही किए जाने की मांग की है।

दरवाजे पर खड़ी ससुर की बाइक का पेट्रोल निकाल कर बाइक पर छिड़क दिया और माफिस की तीली जलाकर आग लगाकर मौके से भाग गया। आग की चपेट में आने से बाइक का जैसे ही तेज आवाज के साथ टायर फटा तो घबराए आसपास के लोग अपने घरों से बाहर निकल आए। बाइक जलती देख लोगों ने समरसेबिल चालू कर आग बुझाई लेकिन तब तक बाइक जलकर खाक हो चुकी थी। सूचना पर पहुंची यूपी 112 पी.आरबी व कोतवाली पुलिस ने जांच की। घटना को लेकर वीरेंद्र सिंह ने कोतवाली पुलिस से कार्यवाही किए जाने की मांग की है।

एसडीएम ने परिषदीय स्कूलों का निरीक्षण किया



परिषदीय स्कूलों का उपजिलाधिकारी ने निरीक्षण किया जहाँ व्यवस्थायें खराब मिली। एसडीएम ज्योति सिंह ने मल्टि स्टोरी विद्यालय काशीराम कालौनी सहित अन्य कई स्कूलों का निरीक्षण किया जहाँ उन्हें साफ सफाई नहीं मिली और शौचालय भी गंदे पाए गए। दिव्यांग बच्चों के लिए न तो रैंप बने थे और न ही उनके लिए

अलग से शौचालय की व्यवस्था थी। कक्षा से लेकर फर्नीचर की भी व्यवस्था संतोषजनक नहीं पायी गयी। मौके पर पंजीकृत बच्चों की संख्या बेहद कम मिली और शिक्षकों की भी उपस्थिति नहीं मिली। मल्टि स्टोरी स्कूल में शिक्षकों के स्थान पर 2 शिक्षा मित्र ही मौजूद मिले। एसडीएम ने नाराजगी व्यक्त करते हुए निर्देश दिए कि स्कूलों में पंजीकृत बच्चों की उपस्थिति बढ़ायी जाये और

उन्हें अच्छी शिक्षा दी जाये। मिड डे मील भोजन की गुणवत्ता उच्च रखी जाये। सभी बच्चे निर्धारित ड्रेस और स्वेटर पहन कर ही स्कूल आयें। साफ सफाई व्यवस्था दुरुस्त रखें और रैंप के साथ ही शौचालय की स्थिति बेहतर करें। एसडीएम ने व्यवस्था सुधारने के लिए खंड शिक्षा अधिकारी और नगर पालिका ईओ को पत्र जारी कर निर्देश दिए।

पत्रकार के पिता की पुण्यतिथि पर गरीबों को कराया भोजन

■ कोंच

डिस्ट्रिक्ट प्रेस क्लब के संरक्षक वरिष्ठ पत्रकार पुरुषोत्तमदास रिछरिया के पिता और साप्ताहिक रिछरिया दर्शन के संस्थापक/प्रधान संपादक रहे स्व. कृष्णगोपाल रिछरिया को उनकी 17 वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि देते हुए उनके कृत कार्यों को याद किया गया। दरिद्र नारायण सेवा समिति में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में अधिकारियों, नगर के तमाम समाजसेवियों और पत्रकारों ने उन्हें कलम का धनी पत्रकार निरूपित करते हुए कहा कि स्व. रिछरिया ने गरीबों और किसानों की समस्याओं को लेकर हमेशा उनकी आवाज अखबार के माध्यम से बुलंद की, उन्हें आशु कवि के रूप में भी जाना जाता है। दरिद्र नारायण सेवा समिति के तत्वाधान में दिवंगत पत्रकार एवं साहित्यकार कृष्णगोपाल रिछरिया की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन वरिष्ठ पत्रकार अरुण श्रीवास्तव की अध्यक्षता, एसडीएम ज्योति सिंह के मुख्य आतिथ्य एवं सीओ डॉ. देवेन्द्र कुमार पंचोरी, तहसीलदार जितेंद्र सिंह पटेल, प्रभारी निरीक्षक अरुण कुमार



राय एवं डिस्ट्रिक्ट प्रेस क्लब अध्यक्ष संजय सोनी के विशिष्ट आतिथ्य में किया गया। श्रद्धांजलि सभा में मौजूद नगर के समाजसेवियों एवं पत्रकारों ने भावसिक्त श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें एक श्रेष्ठ कलमकार बताया। मुख्य अतिथि एसडीएम ने कहा, पत्रकारिता एक मिशन है। पत्रकार समाज के दबे कुचलों की आवाज बन कर शासन प्रशासन से उन्हें न्याय दिलाने

की जिम्मेदारी बखूबी निभाते हैं। सीओ ने कहा, एक पत्रकार संवेदनशील रह कर जनता की समस्याओं को प्रमुखता से उठाने का काम निरपेक्ष भाव से करता है। पत्रकारिता के श्रेष्ठ मानदंडों को अपना कर ही एक दिवंगत पत्रकार को सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। अन्य अतिथियों ने भी कहा, पीत पत्रकारिता को प्रश्रय न देकर अपनी कलम का उपयोग सच्चाई का उदघाटन करने में लगाएं। संचालन समिति

के संयोजक कदोरेलाल यादव बाबूजी ने किया। इस अवसर पर स्व. रिछरिया के परिजनों बेटे पुरुषोत्तमदास, श्याममोहन, राममोहन, अनिलकुमार, पौत्र अभिषेक, ऋषभ, अमन, कपिल, कुशाग्र एवं प्रपौत्र अक्षत ने जरूरतमंदों को भोजन कराया। इस दौरान सेठ नाथिर, हरिश्चंद्र तिवारी, रामप्रकाश यादव, तरुण निरंजन, विवेक द्विवेदी, रविकांत द्विवेदी, जयप्रकाश रावत, रंजन गोस्वामी, सुंदरम सोनी, नवीन कुशवाहा, राहुल राठौर, राजीव अग्रवाल आदि उपस्थित रहे।

एसडीएम ज्योति सिंह ने आश्रम में नित्यप्रति भोजन करने आने वाले लोगों को यथायोग्य पेंशन दिलाने की जरूरत को समझते हुए सदर लेखपाल अखिलेश को निर्देश दिए कि यहां शिविर लगाकर सभी की औपचारिकताएं पूरी कराएं और जो जिस पेंशन की परिधि में आता हो उस तरह की पेंशन बनवाने का काम प्राथमिकता के आधार पर करें। सर्दी के मौसम को देखते हुए उन्होंने इन जरूरतमंदों को सरकारी कंबल देने के भी निर्देश लेखपाल को दिए हैं।

प्रदर्शनकारियों ने क्रिसमस ट्री को जलाने के खिलाफ सड़कों पर उतरकर विरोध प्रदर्शन किया

सीरिया में विद्रोहियों के कब्जे के बाद डर के साए में मन रहा क्रिसमस

- देश में करीब तीन लाख क्रिश्चियन आबादी है
- इस्लामी विद्रोहियों के शासन को लेकर लोगों में डर का भाव

एजेंसी, दमिश्क

सीरिया में तख्तापलट के बाद ही पहला त्योहार क्रिसमस आया है। इस त्योहार से पहले ईसाई धर्म की चिंताएं भी बढ़ गई थीं। लोगों को डर था कि कट्टरपंथी संगठन के दमिश्क पर कब्जे के बाद क्रिसमस कैसे मनाएंगे। अब आपको बताते हैं वहां त्योहार के दौरान कैसा माहौल रहा। राजधानी में ईसाई समुदाय के लोगों ने जमकर विरोध प्रदर्शन किया। उनके बीच क्रिसमस ट्री को जलाए जाने को लेकर काफी आक्रोश रहा। वहीं दमिश्क के चर्च में



लगभग 500 श्रद्धालुओं के बीच क्रिसमस से पहले लोगों ने भजन गए, लोगों का कहना है कि उन्होंने कई सालों बाद राहत की सांस ली।

लोगों में डर का माहौल

सारा लतीफा नाम की एक महिला ने बताया कि पहले

वहीं सीरिया की राजधानी दमिश्क

में सैकड़ों प्रदर्शनकारियों ने क्रिसमस ट्री को जलाने के खिलाफ सड़कों पर उतरकर विरोध प्रदर्शन किया। सोशल मीडिया पर एक वीडियो सामने आया, जिसमें मध्य सीरिया के ईसाई बहुल शहर सुकायलाबिया में क्रिसमस ट्री को जलते हुए देखा जा सकता है। सोशल मीडिया पर एक वीडियो में

क्रिसमस ट्री जलाया गया

दिखाया गया है कि

हुड पहने लड़कों के पास ईसाई-बहुल शहर सुकायलाबिया में पेड़ में आग लगा रहे हैं। सीरियन ऑब्जर्वेटरी फॉर ह्यूमन राइट्स युद्ध निगरानीकर्ता ने कहा कि वे विदेशी जिहादी थे। सीरिया के विजयी इस्लामी समूह हयात तहरीर अल-शाम (एचटीएस) के एक स्थानीय धार्मिक नेता ने आगजनी की निंदा की।

उन्हें डर था कि बशर अल-असद से सत्ता छिनने और विद्रोही इस्लामी गुटों के शासन के आने के बाद क्रिसमस कैसे मनाया जाएगा। उनका कहना है कि मौजूदा परिस्थितियों में एक साथ आना और खुशी से प्रार्थना करना आसान नहीं था, लेकिन भगवान का श्रुं कह हि हमने ऐसा किया। एक चर्च में मंगलवार को बिना किसी रोकटोक के जुटी भीड़ ने उनके इस डर को कम किया। वहीं सीरिया के नवनिर्वाचित

विदेश मंत्री असद हसन अल-शिबानी ने मंगलवार को ईरान से कहा कि वह सीरिया में अराजकता न फैलाए बल्कि सीरियाई लोगों की इच्छा और देश की संप्रभुता का सम्मान करे। एक्स पर एक पोस्ट में, शिबानी ने कहा, 'ईरान को सीरियाई लोगों की इच्छा और देश की संप्रभुता और सुरक्षा का सम्मान करना चाहिए। हम उन्हें सीरिया में अराजकता न फैलाने से चेतावनी देते हैं।'

डी.पी.आर.के. की खुश माताएं

कोरिया। डी.पी.आर.के. के एक प्रमुख समाचार-पत्र रोडोंग सिममुन के 1 सितंबर के अंक में "547th Triplets Leave Pyongyang Maternity Hospital" शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ। संक्षिप्त लेख का एक भाग इस प्रकार है: मेडिकल स्टाफ द्वारा गर्मजोशी से विदाई दिए जाने के बीच 31 अगस्त को ट्रिप्लेट्स (दो लड़कियां और एक लड़का) अस्पताल से विदा हुए। शिशुओं की मां जोंग उन हुई, उत्तरी हंगे प्रांत के फ्योंगसान काउंटी शहर में रहती हैं। मार्च में जैसे ही पता चला कि वह तीन बच्चों की मां बनने वाली है, तो जोंग को फ्योंगसांग मैटर्निटी अस्पताल रेफर कर दिया गया। जन्म के समय तीनों शिशुओं का वजन क्रमशः 2.03 किग्रा, 1.62 किग्रा और 2.11 किग्रा था। उन्हें इनक्यूबेटर में रखा गया था। जब वे अस्पताल से बाहर निकले, तो वे सभी स्वस्थ थे, प्रत्येक का वजन 4 किग्रा से अधिक था। राज्य की ओर से शिशुओं और उनकी मां को उपहार स्वरूप सोने की अंगुठियां और चांदी की खंजरों भेंट की गई। प्रसूति अस्पताल, कभी-कभी हवाई जहाज से। तीन बच्चों को अस्पताल में तब तक पाला जाता है जब तक उनका वजन सामान्य नहीं हो जाता। अस्पताल से निकलने के बाद भी, वे शिशु गुहों और अनाथालयों में सरकारी खर्च पर एक डॉक्टर और एक नर्स की विशेष देखभाल में आते हैं और उन्हें रहने के लिए उचित परिस्थितियां प्रदान की जाती हैं। राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाएं केवल तीन बच्चों की माताओं को ही नहीं दी जाती हैं। जुलाई 1980 में उद्घाटन किया गया, फ्योंगसांग मातृ अस्पताल महिलाओं के लिए एक आधुनिक, व्यापक चिकित्सा केंद्र है। कोरियाई महिलाएं अस्पताल को अपने "माता-पिता



का घर" कहती हैं। जब से इसे सेवा के लिए खोला गया है, तब से बड़ी संख्या में महिलाओं को कई तरह की चिकित्सा सेवाएं मिली हैं। नर्सिंग माताओं और अन्य सभी रोगियों को निःशुल्क चिकित्सा सेवा दी जाती है। इसके अलावा, नर्सिंग माताओं को टॉनिक, दवाइयों और पोष्टिक भोजन उपलब्ध कराने के लिए एक सुव्यवस्थित प्रणाली मौजूद है, जो सभी सरकारी खर्च पर उपलब्ध है। लगभग दस साल पहले महिलाओं के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए उच्च-स्तरीय

सुविधाओं से सुसज्जित फ्योंगसांग मातृ अस्पताल का ब्रेस्ट ट्यूमर संस्थान बनाया गया था। हाल ही में देश ने कई बच्चों वाले परिवारों को चिकित्सा सेवा सहित जीवन के विभिन्न पहलुओं में तरजीही उपचार प्रदान करने की प्रणाली स्थापित की है। कई बच्चों वाली महिलाओं को उच्च सरकारी प्रशंसा पत्र दिए जाते हैं। उन लोगों को सम्मान की उपाधियां दी जाती हैं जिन्होंने अपने बच्चों का पालन-पोषण बेहतर तरीके से किया है।

Happy Mothers in DPRK



korea. The September 1 issue of Rodong Simmun, a major newspaper of the DPRK, carried an article titled "547th Triplets Leave Pyongyang Maternity Hospital." The brief article runs in part: The triplets (two girls and one boy) left the hospital on August 31 amid a warm send-off from the medical staff. Jong Un Hui, the mother of the babies, lives in Phyongsan County town in North Hwanghae Province. As soon as she was diagnosed in March as being pregnant with triplets, Jong was referred to the Pyongyang Maternity Hospital. At birth the triplets weighed 2.03kg, 1.62kg and 2.11kg respectively. They were in care in incubators. When they left the hospital, they were all in good health, each weighing more than 4kg. And the babies and their mother were presented with gold rings and silver daggers by the state as gifts. The birth of triplets is regarded in the DPRK as a good sign of

national prosperity and special measures are taken for them. When women are confirmed as being pregnant with triplets, they are promptly delivered to the maternity hospital, sometimes by airplanes. Triplets are brought up in the hospital until their weight reaches to normal. Even after they leave the hospital, they come under the exclusive care of a doctor and a nurse at state expense at baby homes and orphanages and are provided with adequate living conditions. State benefits are not given to the mothers of triplets alone. Inaugurated in July 1980, the Pyongyang Maternity Hospital is a modern, comprehensive medical centre for women. Korean women call the hospital their "parents' home". Since it was opened to service, a large number of women have received a wide variety of medical services. Free medical service is given to the nursing mothers and all other inpatients. In addition, a well-arranged system is in place to provide nursing mothers with tonics, medicines and nutritional foods, all at state expense. About ten years ago the Breast Tumour Institute of the Pyongyang Maternity Hospital equipped with high-end facilities was built to promote women's health. Recently, the country has established a system of providing the families with many children with preferential treatment in various aspects of life including medical service. Women with many children are awarded high official commendations. Honour titles are conferred on those who have brought up their children admirably.

ical services. Free medical service is given to the nursing mothers and all other inpatients. In addition, a well-arranged system is in place to provide nursing mothers with tonics, medicines and nutritional foods, all at state expense. About ten years ago the Breast Tumour Institute of the Pyongyang Maternity Hospital equipped with high-end facilities was built to promote women's health. Recently, the country has established a system of providing the families with many children with preferential treatment in various aspects of life including medical service. Women with many children are awarded high official commendations. Honour titles are conferred on those who have brought up their children admirably.

अवैध बांग्लादेशी छात्रों को स्कूलों में प्रवेश नहीं मिलेगा



नई दिल्ली। दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय ने अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों के नामांकन को रोकने के लिए आदेश जारी किया है। दिल्ली सरकार की ओर से जारी आदेश के अनुसार अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों के नामांकन को रोकने के लिए सख्त प्रवेश प्रक्रियाओं को सुनिश्चित करने और छात्रों के दस्तावेजों को सत्यापित करने का काम किया जाएगा। इस प्रक्रिया के तहत स्कूलों को प्रवेश प्रक्रिया के दौरान बांग्लादेश से अवैध तौर पर आए प्रवासी छात्रों की पहचान करने का निर्देश दिया गया है।

पांच अरब डॉलर का मामला परमाणु ऊर्जा संयंत्र मामले में हसीना के विरुद्ध जांच शुरू

पूर्व पीएम शेख हसीना और उनके परिवार के खिलाफ जांच शुरू कर दी

एजेंसी, ढाका

बांग्लादेश में एक भ्रष्टाचार रोधी समिति ने रूपायु एटमी ऊर्जा संयंत्र में पांच अरब डॉलर के गबन के आरोपों को लेकर पूर्व पीएम शेख हसीना और उनके परिवार के खिलाफ जांच शुरू कर दी है। बांग्लादेश में रूपायु परमाणु ऊर्जा संयंत्र के निर्माण में भारतीय कंपनियों भी शामिल हैं। इसका निर्माण रूस की सरकारी कंपनी रोसातम कर रही है। रूस द्वारा डिजाइन किया गया पहला बांग्लादेशी



परमाणु ऊर्जा संयंत्र, रूपायु बांग्लादेश की राजधानी ढाका से 160 किलोमीटर पश्चिम में बनाया जा रहा है। 'बीडीन्यूज' की रिपोर्ट के मुताबिक, इस बारे में हसीना के साथ उनके बेटे सजीब वाजेद जाय और उनकी भांजी एवं ब्रिटेन की वित्त मंत्री द्यूलिप सिद्धीक से भी पूछताछ की गई। रिपोर्ट में कहा गया कि ऊर्जा संयंत्र परियोजना में पांच अरब डॉलर

के गबन का आरोप है। रूसी निकाय ने आरोपों का खंडन करते हुए कहा है कि वह अपनी सभी परियोजनाओं में खुलेपन की नीति पर प्रतिबद्ध है। उसने कहा, रोसातम स्टेट कॉर्पोरेशन रूपायु एनपीपी परियोजना के कार्यान्वयन में एक पारदर्शी खरीद प्रणाली बनाए रखी है। कॉर्पोरेशन अदालत में अपने हितों और प्रतिष्ठा की रक्षा करने के लिए तैयार है।

मणिपुर को दहलाने की कोशिश नाकाम सुरक्षाबलों ने बरामद किया 3.6 किलोग्राम विस्फोटक

एजेंसी, मणिपुर

भारतीय सेना, असम राइफल्स और मणिपुर पुलिस ने मंगलवार (24 दिसंबर 2024) को चुराचांदपुर जिले में इंपाल-चुराचांदपुर मार्ग पर एक पुल के नीचे से 3.6 किलोग्राम विस्फोटक, डेटोनैटर और अन्य सामान बरामद किया है। मिली जानकारी के अनुसार, उपरवादी बड़े धमाके की तैयारी में थे। मणिपुर के चुराचांदपुर जिले के लीसांग गांव में इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (IED) की मौजूदगी की विशेष ख़ुफ़िया सूचना पर कार्रवाई करते हुए स्थायी कोर के तहत असम राइफल्स और मणिपुर पुलिस ने एक संयुक्त तलाशी अभियान शुरू किया। इस दौरान टीम को इंपाल-चुराचांदपुर



मार्ग पर एक पुल के नीचे से 3.6 किलोग्राम विस्फोटक, डेटोनैटर, कॉर्डेटेक्स और अन्य सामान मिला। भारतीय सेना के स्थायी कोर ने एक्स पर एक पोस्ट में इस बात की जानकारी दी। इससे पहले, भारतीय सेना और मणिपुर पुलिस ने तलाशी अभियान चलाया और कई स्थानों से 21.5 किलोग्राम वजन के पांच इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) बरामद किए। इसकी जानकारी पीआरओ डिफेंस गुवाहाटी ने मंगलवार को एक विज्ञापन में दी।

मिशन से विज्ञानियों को सूर्य के बारे में और अधिक जानने में मदद मिलेगी सूर्य के सबसे करीब पहुंचकर नासा के पार्कर ने रचा इतिहास

एजेंसी, वाशिंगटन

नासा के अंतरिक्षयान पार्कर सोलर प्रोब ने सूर्य के सबसे करीब पहुंचकर इतिहास रच दिया है। सूर्य के बाहरी वातावरण, जिसे कोरोना कहा जाता है, में उड़ान भरकर इतिहास रच दिया है। 692,000 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से उड़ान भरते हुए यह कोरोना से डाटा जुटाएगा। जॉन्स हॉपकिन्स एन्वाय्रॉन्मेंटल एंड स्पेस स्टडीज के मिशन संचालन प्रबंधक निक पिंकिन ने कहा,



कोई भी मानव निर्मित वस्तु कभी भी सूर्य के इतने करीब से नहीं गुजरी। इस मिशन से विज्ञानियों को सूर्य के बारे में और अधिक जानने में मदद मिलेगी। चूंकि इस

अंतरिक्षयान से संपर्क टूट गया है इसलिए शुरूवार तक पता लग सकेंगा कि यह सूर्य के तापमान को सहन कर पाएगा या नहीं। नासा ने वेबसाइट पर कहा, अंतरिक्ष यान को 1,800 डिग्री फारेनहाइट (982 डिग्री सेल्सियस) तक का तापमान का सामना करना पड़ेगा। 2018 में लांच किए जाने के बाद से पार्कर जांच धीरे-धीरे सूर्य की ओर बढ़ रहा है। सीरिया के प्रमुख अहमद अल-शारा ने मंगलवार को पूर्व विद्रोही गुट के प्रमुखों के साथ एक समझौता किया। इसके

तहत सभी विद्रोही गुटों को भंग करने के साथ उन्हें रक्षा मंत्रालय से जोड़ने पर सहमति बनी। पिछले सप्ताह प्रधानमंत्री मोहम्मद अल-बशीर ने कहा था कि जल्द ही मंत्रालय को पूर्व विद्रोही गुटों और बशर अल-असद की सेना से निकले अधिकारियों की नियुक्ति के साथ मजबूत बनाया जाएगा। नए शासकों ने बशर अल-असद को गद्दी से हटाने वाले विद्रोह के प्रमुख मुर्हॉफ अबू कसरा को अंतरिम सरकार का रक्षा मंत्री बनाया है।

ग्लोबल साउथ के देशों में बढ़ रहा क्रिक्स का प्रभाव

चीन ने मंगलवार को कहा कि ग्लोबल साउथ में क्रिक्स का प्रभाव काफी ज्यादा बढ़ रहा है क्योंकि यह एकजुटता और सहयोग को बढ़ावा देने वाला भाव मुख्य बंधन रहा है। रूस द्वारा क्रिक्स के नए भागीदार देशों की घोषणा के बारे में पूछे गए सवाल के जवाब में चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माओ निंग ने कहा कि इससे क्रिक्स सहयोग एक नई ऊंचाई पर पहुंच गया है।

तुर्किए में बड़ा हादसा, फैक्ट्री में जोरदार धमाका

इस्तांबुल। तुर्किए में एक फैक्ट्री में हुए जोरदार धमाके में कम से कम 12 लोगों की मौत की खबर है। यह धमाका विस्फोटक बनाने वाली फैक्ट्री में हुए। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, तुर्किए के बालीकेसिर प्रांत में स्थित फैक्ट्री में धमाका हुआ। प्रांत के गवर्नर इस्माइल उस्ताउलु ने बताया कि विस्फोट बालीकेसिर प्रांत के कारेसी इलाके में स्थित फैक्ट्री में हुआ, जिसमें 12 नागरिकों की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हुए। जिस फैक्ट्री में धमाका हुआ, उसका नाम ZSR एयुनिशन प्रोडक्शन फैक्ट्री है। अभी धमाके की जांच का खुलासा नहीं हुआ है। हादसे की भयावहता को देखते हुए मृतकों का आंकड़ा बढ़ने की आशंका है।

केजरीवाल ने जुमलों की बड़ी लकीर खींचना शुरू कर दिया

इस समय दिल्ली में सबसे बड़ी समस्या पेयजल की है तो केजरीवाल ने 24 घंटे पानी का जुमला उछाल दिया।



दो इंडिया गेट से अजय सेतिया अरविंद केजरीवाल जैसा नटवर लाल पैदा ही नहीं हुआ। उनमें एक खासियत है कि वह संकट में फंसने वाले मुद्दों को पहले ही भांप लेते हैं। फिर उन मुद्दों पर जनता को मूख बनाने का उपाय सोचने लगते हैं। अब उन्हें पता है कि दिल्ली में पेयजल और यमुना की सफाई बड़े मुद्दे बनने वाले हैं तो उन्होंने दिल्ली को 24 घंटे शुद्ध पेयजल का जुमला उछाल दिया है। इसी तरह 11 साल पहले उन्होंने यमुना की सफाई का जुमला उछाला था। यमुना के किनारों को सैरगाह बनाने का वादा किया था। इस समय दिल्ली में सबसे बड़ी समस्या पेयजल की है तो उन्होंने 24 घंटे पानी का जुमला उछाल दिया। दिल्ली में बमुरिकल एक-दो घंटों के लिए पानी सप्लाई होता है। कई जगह तो सप्लाई ही नहीं होता, वहां टैकरों से पानी सप्लाई होता है। जहां जहां पानी पाईप लाईन से सप्लाई होता है, वहां पाश कॉलोनिनों को छोड़ दें तो अधिकतर कॉलोनिनों में जगह-जगह पर सीवर की लाइनें टूटी हुई हैं और पेयजल की लाइनें भी लीक होती रहती हैं। दोनों का पानी मिल जाता है, लोगों को घरों में सीवर युक्त पानी सप्लाई हो जाता है। हर रोज किसी न किसी मोहल्ले में यह समस्या हो जाती है। लोग कह रहे हैं कि खुद तो अपने शोशमहल में मिमरल वाटर का सिस्टम लगा लिया, लेकिन दिल्ली की एक तिहाई जनता को सीवर का बदबूदार काला पानी सप्लाई हो रहा है। केजरीवाल ने मुफ्त पानी बिजली का देशभर में डिंबोरा पीट दिया, लेकिन लोग यूट्यूबर्स को हर मनने आने वाले बिल दिखा रहे हैं, और नल से निकलता कोका कोला के रंग का पानी भी। यह भी बता रहे हैं कि गर्मियों में 8-8 घंटे बिजली नहीं आती। केजरीवाल जब 24 घंटे पानी सप्लाई करने की डींगें हांक रहे थे तो उनके बाल में खड़ी आतिशी मालेना दांत फाड़ रही थी। यह 2024 तक यमुना साफ करने और यमुना में डुबकी लगाने जैसा ही वादा है। मूख से मूख भी जानता है कि दिल्ली के पास पानी ही नहीं है। मई जून में जब दिल्ली में पानी के लिए हाहाकार मचा था तो आतिशी मालेना यह कहते हुए धरने पर बैठ गई थी कि हरियाणा सरकार पानी नहीं दे रही। दिल्ली हरियाणा और उप्र पर निर्भर है। केजरीवाल भांप गए हैं कि जैसे 2003 में मध्यप्रदेश में दिग्विजय सरकार सड़क बिजली पानी पर चली गई थी, उसी तरह इस बार उनकी सरकार के परखने उड़ेंगे तो केजरीवाल ने मंगलवार को नया ड्रामा शुरू कर दिया। उन्होंने एक घर में घुसकर नल से पानी पी कर इस अभियान को शुरूआत की। वह यह दिखाना चाहते हैं कि दिल्ली में किसी घर में आरओ की भी जरूरत नहीं होगी। एक दिन पहले उन्होंने महिलाओं को 2100 रुपए महीना और वरिष्ठ नागरिकों के लिए मुफ्त डायलैसिस योजना का ऐलान किया था। अगले दिन वह पानी का ड्रामा। चुनाव का अभी बिगुल नहीं बजा है, लेकिन केजरीवाल ने अभियान में भाजपा और कांग्रेस दोनों को मात दे दी है। कांग्रेस और भाजपा अभी उम्मीदवारों की चयन प्रक्रिया में ही उलझी हुई है। भाजपा पत्रकार वार्ता और एक्स हेंडल पर उसी तरह आरोप पत्र ही जारी कर रही है, जैसे 10 साल से करती आ रही है। कांग्रेस की न्याय यात्रा भी टाए-टाए फिक्स हो चुकी है। महाराष्ट्र के चुनाव के समय कांग्रेस ने ऐलान किया था कि महाराष्ट्र का चुनाव निपटते ही राहुल गांधी खुद दिल्ली में न्याय यात्रा करेंगे। न्याय यात्रा शुरू भी हुई थी, लेकिन बीच में ही बंद हो गई। राहुल गांधी एक दिन भी यात्रा में दिखाई नहीं दिए। ऐसा लगता है कि महाराष्ट्र में करारी हार के बाद राहुल गांधी ने केजरीवाल के सामने घुटने टेक दिए हैं। वैसे ड्रामेबाजी में राहुल गांधी केजरीवाल के भी बाप हैं। केजरीवाल जब नल से पानी पीने का ड्रामा कर रहे थे, ठीक उसी समय राहुल गांधी 30 हजार रुपए की टीशर्ट और तीन लाख के जूते पहन कर एक सब्जी मंडी में सब्जियों के भाव पूछ रहे थे। फिर उन्होंने अपने एक्स हेंडल पर लिखा कि 40 रुपए किलो वाला लहसुन 400 रुपए किलो बिक रहा है। वैसे राहुल गांधी लहसुन को पहचानते भी हैं या नहीं कह नहीं सकते। राहुल गांधी को तय करना चाहिए कि वह किसानों के साथ है या उपभोक्ताओं के साथ है। क्या वह दिल्ली में महंगाई को मुद्दा बनाना चाहते हैं। जबकि, दिल्ली की जनता के लिए महंगाई से बड़ा मुद्दा पेयजल और सफाई है, जिसमें केजरीवाल पूरी तरह विफल रहे हैं। दिल्ली की जनता केजरीवाल को चलता करना चाहती है, लेकिन न कांग्रेस दम दिखा रही है, न भाजपा के नेता कोई दम दिखा रहे हैं। भाजपा ने अभी एक भी उम्मीदवार का ऐलान नहीं किया, जबकि केजरीवाल सभी 70 उम्मीदवारों का ऐलान करने के बाद अब हर रोज नई-नई रेवडी की स्क्रिप्ट लिख कर जनसंपर्क में जुट गए हैं। दिल्ली में भाजपा के साथ कहीं वही न हो जाए, जो महाराष्ट्र में कांग्रेस के साथ हुआ है।

हमले की जिम्मेदारी किसी ने नहीं ली

अफगानिस्तान के जलालाबाद में भारतीय कांसुलेट पर हमला

नई दिल्ली। अफगानिस्तान के जलालाबाद के बंद हो चुके भारतीय कांसुलेट में एक स्थानीय अफगान कर्मी हमले में घायल हो गया है। विदेश मंत्रालय ने मंगलवार को बताया कि वह इस मामले में अफगानी प्रशासन के संपर्क में हैं। उन्हें इस मामले की विस्तृत रिपोर्ट का भी इंतजार है। बताया जाता है कि स्थानीय अफगानी कर्मचारी को बंद कांसुलेट की देखरेख के लिए वहां तैनात किए गया है और उस पर

जानबूझकर हमला किया गया। लेकिन इस हमले की जिम्मेदारी अभी तक किसी ने नहीं ली है। विदेश कर्मी हमले में घायल हो गया है। विदेश मंत्रालय ने मंगलवार को बताया कि वह इस मामले में अफगानी प्रशासन के संपर्क में हैं। उन्हें इस मामले की विस्तृत रिपोर्ट का भी इंतजार है। बताया जाता है कि स्थानीय अफगानी कर्मचारी को बंद कांसुलेट की देखरेख के लिए वहां तैनात किए गया है और उस पर

संपादकीय

बंगलादेश की मांग

बंगला देश की युसु सरकार ने भारत सरकार को पत्र लिखकर भारत में निर्वासित जीवन बिता रही शेख हसीना को वापस बंगलादेश भेजने की मांग की है। जाहिर है, भारत सरकार उसकी यह मांग कभी पूरी नहीं कर सकती। जब-जब भी शेखमुजीबुर्रहमान के परिवार पर संकट आया है, तब-तब भारत ने उनकी मदद की है। बांग्लादेश में इस साल अगस्त में छात्र आंदोलन के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख हसीना को देश छोड़ना पड़ा था और उन्होंने भारत में शरण ली थी। तब से वे भारत में ही रह रही हैं। बांग्लादेश के विदेश मामलों के सलाहकार तौहीद हुसैन ने कहा है कि हमने भारत सरकार से कहा है कि बांग्लादेश सरकार चाहती है कि शेख हसीना न्यायिक प्रक्रिया के लिए बांग्लादेश वापस आएँ। अगर शेख हसीना वापस जाती हैं, तो उनके साथ कुछ भी हो सकता है। उन्हें लंबे समय तक जेल में रखने के साथ ही फांसी की सजा भी दी जा सकती है। भारत और बांग्लादेश की सरकार के बीच साल 2013 में प्रत्यर्पण को लेकर संधि की गई थी। 2013 से भारत के बीच प्रत्यर्पणीय अपराध मामलों में आरोपी या भगोड़े आरोपियों और बंदियों को एक-दूसरे को सौंपने का करार हुआ था। बांग्लादेश सरकार ने कहा है कि इस संधि के तहत वह पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के प्रत्यर्पण की मांग कर रहा है। हालांकि इस प्रत्यर्पण संधि की एक धारा में कहा गया है कि प्रत्यर्पित किए जाने वाले व्यक्ति के खिलाफ लगाए गए आरोप अमर राजनीतिक प्रकृति के हों तो अनुरोध खारिज किया जा सकता है। जाहिर है कि बांग्लादेश ने जो आरोप शेख हसीना पर लगाए हैं, वे राजनीति से प्रेरित हैं इसलिए शेख हसीना के मामले में प्रत्यर्पण संधि लागू नहीं होती है। हालांकि बांग्लादेश की पूर्व पीएम शेख हसीना के खिलाफ सामूहिक हत्या, लूटपाट और जालसाजी के आरोप लगाए हैं। इसके अलावा बांग्लादेश के एक आयोग ने अपनी जांच रिपोर्ट में उनपर लोगों को गायब करने का भी आरोप लगाया है। 'अफ्लोडिंग द टूथ' नाम की इस रिपोर्ट में शेख हसीना पर आरोप लगाए गए थे कि वह बांग्लादेश के कुछ अहम शक्तिशालियों को गायब करवा रही हैं। प्रधानमंत्री रहते शेख हसीना पर इस तरह के आरोप लगते रहे हैं। उन पर ये भी आरोप हैं कि उन्होंने विपक्षी नेताओं को जेल में टूस कर चुनाव लड़ा और अपनी मनमानी की। चुनाव आयोग पर धांधली करने के आरोप लगे थे। भले ही शेख हसीना पर कुछ भी आरोप लगे हों, लेकिन भारत सरकार उनका प्रत्यर्पण नहीं करेगी, ऐसी उम्मीद की जा सकती है।

पाठकवाणी

साइबर क्राइम का गढ़ झारखंड

ऐसा कोई दिन खाली नहीं जाता, जब साइबर क्राइम से जुड़े मामले में विभिन्न राज्यों की पुलिस साइबर अपराधियों की तलाश में झारखंड राज्य के जामताड़ा, देवघर, गिरीडीह, दुमका आदि जिला नहीं पहुंचती। कभी-कभी तो पुलिस को इन अपराधियों को बिना गिरफ्तार किए ही लौट जाना पड़ता है, क्योंकि ये शांतिर अपराधी गिरफ्तारी के डर से घरों में ज्यादा समय उपलब्ध ही नहीं रहता है। ज्यादातर जंगलों में रह कर अपनी गतिविधियां चलाते हैं। गिरफ्तारी नहीं हो पाने का एक मुख्य कारण यह भी है कि लोकल पुलिस और इन अपराधियों के बीच चोली-दामन का साथ रहता है। बिना पुलिस के सहयोग से ये अपना धंधा नहीं चला सकते। साइबर क्राइम से पैसे कमाने की बैचैनी अब प्रोफेशनल धंधा बन चुकी है। पढ़े-लिखे युवाओं की सलिभता इस तरह के अपराध में बढ़ चुकी है। हैरान करने वाली बात यह है कि अब महिलाएं भी इस तरह की गतिविधियों में शामिल होकर साइबर टगी कर रही हैं। ऐसे बहुत सारे परिवार हैं, जो साइबर क्राइम को अपराध नहीं समझते, बल्कि एक जरिया मानते हैं पैसे कमाने का। बैंक द्वारा लगातार मैसेज, कॉल के माध्यम से लोगों को सुचित किया जाता है कि अपना डाटा किसी को नहीं बतायें, फिर भी लोग थोड़ा-थोड़ा के शिकार हो रहे हैं। लोग जब तक जागरूक नहीं होंगे तब तक यह अपराध रूकना मुश्किल है।

-संदीप कुमार, मधुपुर (झारखंड)

कुछ ख़ास



वोटों के लिए भीमराव आंबेडकर का नाम इस्तेमाल करना आज कल एक फेशन हो गया है। अमित शाह ने संसद में उनका अपमान किया, फिर राहुल-प्रियंका ने हमारी नीली क्रांति को फेशन शो बनाया। उपेक्षितों के आत्म-सम्मान के लिए बीएसपी का मिशन जारी रहेगा।

-आकाश आनंद, बसपा नेता

आज का ट्वीट



‘‘वो घंटिया कवि पहले हिंदू-मुस्लिम भाईचारा बेचना था। कला की पहली शर्त है बेहतर इंसानियत। एक घंटिया इंसान, बढ़िया कवि कभी नहीं हो सकता। शर्म तो आती होगी?’’

-आरफा खानम शेरवानी

एस जयशंकर की वाशिंगटन यात्रा

सामयिक



शाहीन सबा

अमेरिका की सत्ता में डेमोक्रेट्स हों या रिपब्लिकन, उन्हें नई दिल्ली के महत्व का अहसास है। 2014 से भारत की कमान नरेन्द्र मोदी के हाथों में है। इस बीच वर्ल्ड आर्डर में जबरदस्त बदलाव हुए हैं। हमारे आस-पड़ोस में कई देशों में सत्ता बदल गई। कई पड़ोसी देशों में बड़ी राजनीतिक घटनाएँ घटी हैं परंतु नई दिल्ली में विश्वसनीय लीडरशिप कायम है।

डो नाल्ड ट्रंप की वापसी में एक महीने से भी कम समय बचा है। इस बीच कई ऐसी घटनाएँ घट रही हैं, जिन्होंने ध्यान आकृष्ट किया है। भारत के परिप्रेक्ष्य में बात करें तो पाँच-छह दिन पहले राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल बीजिंग की यात्रा करके लौटे हैं। विदेश सचिव विक्रम मिश्री हाल में ढाका गए थे, जहाँ उनकी भेंट अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद युनुस से हुई है। छह दिवसीय अमेरिकी यात्रा पर विदेश मंत्री एस जयशंकर रवाना हो गए हैं, जहाँ उनकी अपने समकक्ष एंटनी ब्लिंकन से अहम वार्ता होने होने वाली है। यह सारी मुलाकातों कुछ घटनाओं के बीच हो रही हैं, इसलिए इनका महत्व बढ़ जाता है। यूक्रेन ने रूस के कजाख शहर पर ड्रोन अटैक किए हैं। देर स्वेर रूस की ओर से प्रतिक्रिया संभावित है। इजरायल-हमास-हिजबुल्ला-ईरान के बीच संघर्ष जारी है। कुछ घटनाएँ पाकिस्तान और बांग्लादेश में भी घट रही हैं। हाल में अमेरिका ने पाकिस्तान पर लंबी दूरी की मिसाइलें बनाने का गंभीर आरोप लगाते हुए चार कंपनियों को ब्लैक लिस्ट भी किया है। चूकि बाइडेन शासन का अंत हो रहा है और ट्रंप की टीम टेकओवर करने जा रही है, इसलिए भी भारतीय विदेश मंत्री की वाशिंगटन यात्रा को बेहद अहम जा रहा है।

जब से बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार का तख्ता पलट हुआ है और मोहम्मद युनुस की अगुआई में एक अस्थायी व्यवस्था ने कमान संभाली है, तब से वहाँ अल्पसंख्यक हिंदुओं, ईसाइयों और दूसरे समुदायों पर हमले हो रहे हैं, जो रूकने का नाम नहीं ले रहे हैं। इन पर सत्ता पर काबिज लोगों का कहना है कि भारत में गलत तरीके से चीजें पेश की जा रही हैं। जो शेख हसीना को सपोर्ट करते रहे हैं, यह हमले उन पर हुए हैं। यह तर्क वैसे गले से नीचे उतरने वाले नहीं हैं परंतु यदि मान भी लें तो कोई वर्ग, समुदाय अथवा संगठन आदि किसी दल विशेष को समर्थन और बोट देते हैं तो दूसरे दल से जुड़े लोगों को उनकी जान लेने का हक कैसे मिल जाता है। हाल में भारत के विदेश सचिव विक्रम मिश्री की ढाका यात्रा दरअसल, इसी संदर्भ में थी। भारत की गहरी चिंताओं से बांग्लादेश के मौजूदा निजाम को न केवल अगवात कराया गया बल्कि इसके संभावित दुष्प्रभावों से भी आगाह किया गया। डोनाल्ड ट्रंप ने चुनाव जीतने के उपरांत अपने संबोधन में बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे हमलों पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था कि इन्हें तुरंत रोकें जाने की जरूरत है। भारत भी संयम का परिचय दे रहा है और ट्रंप के कमान संभालने की प्रतीक्षा कर रहा है।

जब जयशंकर वाशिंगटन रवाना हो रहे हैं, ठीक उसी समय अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलिवन और मोहम्मद युनुस के बीच हुई बातचीत का व्योरा भी सामने आ रहा है। युनुस चूकि डेमोक्रेट्स के प्रिय हैं और शेख हसीना की जगह उन्हें सत्ता में लाने वाले भी वही माने जा रहे हैं, इसलिए सुलिवन ने यदि बाइडेन शासन की विदाई की बेला में उनकी तारीफ की है, उसे भी समझा जा सकता है। वैश्विक कूटनीति के जानकारों का मानना है कि अभी अमेरिका में सत्ता के हस्तांतरण

और परिवर्तन का दौर चल रहा है, कुछ समय बाद ऐसा बांग्लादेश, यूक्रेन और कुछ दूसरी जगहों पर देखने को मिल सकता है। भारत की दरअसल इस पूरे घटनाक्रम पर बारीक निगाह है। हम अब वाच एंड वेट और सूत अवस्था वाली विदेश नीति से अब बाहर निकल आए हैं। मोदी सरकार हर मुद्दे पर आगे बढ़कर एक्ट करती हुई नजर आती है। अजित डोभाल की बीजिंग यात्रा, विक्रम मिश्री की ढाका यात्रा और जयशंकर की अब वाशिंगटन यात्रा को इसी संदर्भ में देखे जाने की जरूरत है। इन तीनों यात्राओं का समय बेहद अहम है। जयशंकर की यात्रा को बाइडेन प्रशासन और ट्रंप प्रशासन के बीच कड़ी के तौर पर देखा और समझा जा सकता है। इसी तरह अजित डोभाल की यात्रा का ही नतीजा है कि गलवान की झड़प के बाद से जो मानसरोवर यात्रा और सीमा के आर-पार सड़क मार्ग से व्यापार थम गया था, उसकी फिर से शुरूआत होने जा रही है। विदेश सचिव की ढाका यात्रा के तुरंत बाद बांग्लादेश के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने कोलकाता स्थित पूर्वी कमांड का दौरा किया जहाँ मुक्ति दिवस के सिलसिले में हर वर्ष कार्यक्रम का आयोजन होता है।

अमेरिका की सत्ता में डेमोक्रेट्स हों या रिपब्लिकन, उन्हें नई दिल्ली के महत्व का अहसास है। 2014 से भारत की कमान नरेन्द्र मोदी के हाथों में है। इस बीच वर्ल्ड आर्डर में जबरदस्त बदलाव हुए हैं। हमारे आस-पड़ोस में कई देशों में सत्ता बदल गई। नए राष्ट्र प्रमुख आ गए। मालदीव, पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, म्यांमार से लेकर कई पड़ोसी देशों में बड़ी राजनीतिक घटनाएँ घटी हैं परंतु नई दिल्ली में स्थायी, टिकाऊ और

विश्वसनीय लीडरशिप कायम है। अमेरिका तक में तीन राष्ट्रपति बदल चुके हैं। 2014 में जब मोदी प्रधानमंत्री बने, तब अमेरिका में बराक ओबामा राष्ट्रपति थे। 2016 में ट्रंप आ गए। 2020 में जो बाइडेन सत्ता में आ गए तो अब 2024 में फिर से डोनाल्ड ट्रंप वापस आ रहे हैं। मोदी के नेतृत्व में भारत ने जटिल से जटिल स्थितियों परिस्थितियों का सफलतापूर्वक सामना किया है और अधिकांश का समाधान भी खोजा है। वर्ल्ड आर्डर में अब मोदी की वरिष्ठता और अनुभव को कई अवसरों पर और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर महत्व भी मिला है और साराहना भी।

तीसरी बार सत्ता की बागडोर संभालने के तुरंत बाद जब उनकी पहली आधिकारिक यात्रा मास्को की हुई तब तमाम नुक़ाचीनी की गई थी। खासतौर से अमेरिका के विदेश विभाग की ओर से इस पर थोड़ी नाखुशी जाहिर की गई परंतु भारत पर अब इसका कोई प्रभाव होते हुए दिखाता नहीं है, क्योंकि संतुलन कैसे साधा जाता है, यह मौजूदा नेतृत्व जानता है। मास्को के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने यूक्रेन की राजधानी कीव पहुंचकर जेलेंस्की से भी मुलाकात की और कुछ समय बाद अमेरिका की यात्रा कर जो बाइडेन से भेंट की। तीनों ही नेताओं से वह गर्मजोशी से गले मिलते हुए भी दिखाई दिए। दरअसल, यही बदला हुआ भारत है, जिसे कुछ ताकतों ने पचा पा रही है और न गले से नीचे उतार पा रही है।

तीखी नजर

सर्दी में स्नान और पाप मुक्ति की चिंता



जवाहर चौधरी

धक्कों से मैं भी परेशान हूँ। मेरी यह परेशानी नयी नहीं है। प्रायः सर्दी का मौसम शुरू होते ही यह खतरा मंडराने लगता है। घर वाले धक्का मार मार के मुझे बाथरूम में टूस देते हैं। बाल्टी में भरा ठंडा पानी ऐसा चेंटला है ना कि रूह संसद की तरह हिल जाती है। मन बहिर्गमन के लिए हूँ हूँ करती है पर दरवाजे के बाहर खड़ी सभापति 'प्लीज बैठ जाओ और नहा लो' की रट लगाये रहती है। मैं तो कहता हूँ नए साल में एक नया कानून यह भी बनना चाहिए कि सर्दी के मौसम में किसी को जबरन नहलाना शारीरिक शोषण और धक्का मारना शारीरिक प्रताड़ना माना जाएगा। अबकी कर सो पार हो जाए तो देख लेना सबसे स्नान पीडित यही मांग उठाएंगे। ठंड में नहाने का कानून ही बदल देगे।

हमारे देश में नहाना एक परम्परा है और जरूरत भी। नहाने के लिए श्रद्धालु कुम्भ तक में पहुँच जाते हैं। मानते हैं कि पाप धूल गए, यह परंपरा है। सुलझी हुई आत्मा वाले कुछ लोग अपने बूढ़े मां-बाप को कुम्भ में खपाने आते हैं और हाथोंहाथ पाप धो कर लौट जाते हैं, यह जरूरत है। किसी ने कहा है कि राम तेरी गंगा मैली हो गई पापियों के पाप धोते धोते। बात अपने आप में साफ है कि जितने भी नहा रहे हैं उसका कारण मात्र शारीरिक सफाई नहीं है। सांस पर हमने देखा कि करोड़ों खर्च हो गए, महीनों कोशिश की लेकिन गंगा सफ नहीं हुई। आदमी का पाप गंगा में गहराई तक पैठा हुआ है, ऊपर होता तो बुलडोजर से धराशायी करवाया जा सकता था। सुना है गंगा में सक्षम अधिकारी से कहा कि मुझे साफ करने की अपेक्षा लोगों को पाप करने से रोको, मैं अपने आप साफ हो जाऊँगा। सक्षम ने अक्षम होते हुए सारी कहा और फिर पलट कर नहीं देखा। ज्यादातर लोग भूल जाते हैं, किमेदार याद नहीं करना चाहते हैं, गंगा नाक दबाये बहती रहती है। किसीने सफाई अभियान को धक्का नहीं मारा लेकिन आइसीयू से बाहर निकल ही नहीं रहा है। पता नहीं जिंदा भी है या मर गया। चलो अपन तो कुम्भ में देखते हैं, पता नहीं कोई सफाई अभियान को मेलें में छोड़ गया हो।

इधर आम आदमी, जिसके पास खाने पहनने को नहीं है, जो पांच किलो मुफ्त राशन के भरपेटे घर में पड़ा है, जिसके पास सही गलत कोई रोजगार नहीं है, सड़क पर निकलता है तो गुंडों से डरता है, वर्दी वाला दिख जाए तो कानून के डर से कांपता है, प्रभु दर्शन को जाए तो अपवित्रता के डर दूर खड़ा रहता है! जो पाप करने कहा जाएगा कोई गुंजाइश है? पाप करने के लिए भी सामर्थ्य होना चाहिए। छोटा मोटा लल्लू पंजु पाप के समूह संसार में फिट नहीं बैठता है। वो कहते हैं ना हाथ पैर में दम नहीं और हम किसी से काम नहीं। ऐसा आदमी नहा भी ले तो समझो पाप ही करेगा। उसके लिए तो पीने को पानी मिल जाए तो बहुत है। परीब का दिल बड़ा होता है, पीने भर को मुफ्त पानी मिल जाए तो सरकार बनवा देता है दन से।

सभी लोग सरसा नदी को पार कर रहे थे तो पानी का बहाव इतना तेज हो गया कि पूरा परिवार बिछड़ गया। बिछड़ने के बाद गुरु गोविंद सिंह व दो बड़े साहिबजादे बाबा अजीत सिंह व बाबा जुझार सिंह चमकौर पहुँच गए। वहीं, माता गुजरी, दोनों छोटे साहिबजादे बाबा जोरावर सिंह व बाबा फतेह सिंह और गुरु साहिब के सेवक रहे गंगु गुरु साहिब व अन्य सिखों से अलग हो गए। इसके बाद गंगु इन सभी को अपने घर ले गया लेकिन उसने सरहिंद के नवाज वजीर खान को जानकारी दे दी जिसके बाद वजीर खान माता गुजरी और दोनों छोटे साहिबजादों को कैद कर लिया। वजीर खान ने दोनों छोटे साहिबजादों को अपनी कचहरी में बुलाया और डरा-धमकाकर उन्हें धर्म परिवर्तन करने को कहा लेकिन दोनों साहिबजादों ने जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल के जयकारे लगाते हुए धर्म परिवर्तन करने से मना कर दिया। वजीर खान ने फिर धमकी देते हुए कहा कि कल तक या तो धर्म परिवर्तन करो या मरने के लिए तैयार रहो। 27 दिसंबर को अगले दिन ठंडे बुर्ज में कैद माता गुजरी ने दोनों साहिबजादों को बेहद प्यार से तैयार करके दोबारा से वजीर खान की कचहरी में भेजा। यहाँ फिर वजीर खान ने उन्हें धर्म परिवर्तन करने को कहा लेकिन छोटे साहिबजादों ने मना कर दिया और फिर से जयकारे लगाने लगे। यह सुन वजीर खान तिलमिला उठा और दोनों साहिबजादों को जिंदा दीवार में चिनवाने का हुक्म दे दिया और साहिबजादों को शहीद कर दिया। यह खबर जैसे ही माता दादी माता गुजरी के पास पहुँची, उन्होंने भी अपने प्राण त्याग दिए। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि गुरु गोविंद सिंह जी के छोटे साहबजादों को श्रद्धांजलि-वीर बाल दिवस 26 दिसंबर 2024 पर विशेष, छोटे साहबजादों का स्मरण आते ही सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है व सिर श्रद्धा से झुक जाता है।साहबजादों बाबा जोरावर सिंह व फतेहसिंह के सम्मान में बाल दिवस के साथ बाल पुरस्कार 26 जनवरी के स्थान पर 26 दिसंबर को देना सराहनीय निर्णय है।

सर्दियों के अदम्य साहस से प्रेरणा लेना आवश्यक है। साथियों बात अगर हम 26 दिसंबर 2024 को वीर बाल दिवस के रूप में मनाने व इसी दिन पीएम राष्ट्रीय बाल पुरस्कार वितरण की करें तो, पीएम आह्वान पर 2022 से 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस के रूप में मनाना जाते हैं। यह दिन सिखों के दसवें गुरु गोविंद सिंह के दो छोटे साहिबजादे 9 साल के बाबा जोरावर सिंह और उनके छोटे भाई 5 साल के बाबा फतेह सिंह की वीरता को समर्पित है। 26 दिसंबर को 1705 में इन महान सपूतों को धर्म नहीं बदलने पर प्रतिशोध स्वरूप वजीर खान ने जिंदा दीवार में चुनवा दिया था। इस शहादत को नमन करने के लिए इस बार वीर बाल दिवस के मौके पर बहादुर बच्चों को सम्मानित किया जा जाएगा। केंद्रीय मंत्री ने सोशल मीडिया पर लिखा पीएम राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित बच्चों के साथ वीर बाल दिवस मनाया जाएगा। यह वह नहीं करने पर उन्हें क्रमशः 8 और 5 साल की उम्र में कथित तौर पर जिंदा दफन कर दिया गया था। बदली परिभाषा, अब, वीर वह है जो अंधेरो को जाता है और सिर श्रद्धा से झुक जाता है। देश में पहली बार पीएम के ऐलान के बाद ही 26 दिसंबर को गुरु गोविंद सिंह जी के छोटे साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह जी और बाबा फतेह सिंह जी के साहस को श्रद्धांजलि देने के लिए वीर बाल दिवस पूरे देश-विदेश में मनाया जाता है। गुरुद्वारा श्री फतेहगढ़ साहिब उस स्थान पर खड़ा है, जहाँ साहिबजादों ने आखिरी सांस ली। केंद्रीय महिला एवं बाल कल्याण मंत्री ने मंगलवार 24 दिसंबर 2024 को एक बयान जारी कर-

गुरु गोविंद सिंह जी के छोटे साहबजादों के साहस को श्रद्धांजलि - वीर बाल दिवस 26 दिसंबर 2024 पर विशेष

छोटे साहबजादों का स्मरण आते ही सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है व सिर श्रद्धा से झुक जाता है

साहबजादों बाबा जोरावर सिंह व फतेहसिंह के सम्मान में बाल दिवस के साथ बाल पुरस्कार 26 जनवरी के स्थान पर 26 दिसंबर को देना सराहनीय निर्णय-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोदिया महाराष्ट्र



एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोदिया महाराष्ट्र

गोदिया - वैश्विक स्तरपर आदि अनादि काल से भारत की अनेक गाथाएँ इतिहास में दर्ज हैं, जिसका बखान उनके प्रकाशोत्सव वर्षगांठ या उस दुखद पल कुबानी दिवस के रूप में उसको याद किया जाता है। इसी कड़ी में 26 दिसंबर 2024 को सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह जी के परिवार की शहादत को आज भी इतिहास की सबसे बड़ी शहादत माना जाता है। छोटे साहिबजादों का स्मरण आते ही सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है और सिर श्रद्धा से झुक जाता है। देश में पहली बार पीएम के ऐलान के बाद ही 26 दिसंबर को गुरु गोविंद सिंह जी के छोटे साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह जी और बाबा फतेह सिंह जी के साहस को श्रद्धांजलि देने के लिए वीर बाल दिवस पूरे देश-विदेश में मनाया जाता है। गुरुद्वारा श्री फतेहगढ़ साहिब उस स्थान पर खड़ा है, जहाँ साहिबजादों ने आखिरी सांस ली। केंद्रीय महिला एवं बाल कल्याण मंत्री ने मंगलवार 24 दिसंबर 2024 को एक बयान जारी कर-

साहबजादों के साहस को श्रद्धांजलि वीर बाल दिवस 26 दिसंबर 2024



सपूतों के अदम्य साहस से प्रेरणा लेना आवश्यक है। साथियों बात अगर हम 26 दिसंबर 2024 को वीर बाल दिवस के रूप में मनाने व इसी दिन पीएम राष्ट्रीय बाल पुरस्कार वितरण की करें तो, पीएम आह्वान पर 2022 से 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस के रूप में मनाना जाते हैं। यह दिन सिखों के दसवें गुरु गोविंद सिंह के दो छोटे साहिबजादे 9 साल के बाबा जोरावर सिंह और उनके छोटे भाई 5 साल के बाबा फतेह सिंह की वीरता को समर्पित है। 26 दिसंबर को 1705 में इन महान सपूतों को धर्म नहीं बदलने पर प्रतिशोध स्वरूप वजीर खान ने जिंदा दीवार में चुनवा दिया था। इस शहादत को नमन करने के लिए इस बार वीर बाल दिवस के मौके पर बहादुर बच्चों को सम्मानित किया जा जाएगा। केंद्रीय मंत्री ने सोशल मीडिया पर लिखा पीएम राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित बच्चों के साथ वीर बाल दिवस मनाया जाएगा। यह वह नहीं करने पर उन्हें क्रमशः 8 और 5 साल की उम्र में कथित तौर पर जिंदा दफन कर दिया गया था। बदली परिभाषा, अब, वीर वह है जो अंधेरो को जाता है और सिर श्रद्धा से झुक जाता है। देश में पहली बार पीएम के ऐलान के बाद ही 26 दिसंबर को गुरु गोविंद सिंह जी के छोटे साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह जी और बाबा फतेह सिंह जी के साहस को श्रद्धांजलि देने के लिए वीर बाल दिवस पूरे देश-विदेश में मनाया जाता है। गुरुद्वारा श्री फतेहगढ़ साहिब उस स्थान पर खड़ा है, जहाँ साहिबजादों ने आखिरी सांस ली। केंद्रीय महिला एवं बाल कल्याण मंत्री ने मंगलवार 24 दिसंबर 2024 को एक बयान जारी कर-

बच्चों को पुरस्कार प्रदान करेगी। प्रत्येक विजेता को पदक, प्रमाण पत्र और प्रशस्ति पत्र पुस्तिका दिए जाएंगे। वीर बाल दिवस पर राष्ट्रीय कार्यक्रम 26 दिसंबर, 2024 को ही नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित किया जाएगा। यह दिन युवा रिचामांगों को पोषित करने, उनकी रचनात्मकता बढ़ाने और विकसित भारत की भविष्यदृष्टि में योगदान के लिए उन्हें प्रेरित करने पर केंद्रित होगा। इस कार्यक्रम में पीएम शामिल होंगे। आयोजन में पीएम राष्ट्रीय बाल पुरस्कार विजेताओं और गणमान्य व्यक्तियों सहित लगभग 3,500 बच्चे इस कार्यक्रम में भाग लेंगे। कार्यक्रम में बच्चों द्वारा भारतीय विरासत को दर्शाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। बच्चे विविध संस्कृतियों के प्रतिनिधित्व वाले मार्च पारट में भी शामिल होंगे। इसके अलावा माई गांव/माई भारत पोर्टल पर ऑनलाइन गतिविधियां सहित देश भर के स्कूलों, बाल देखभाल संस्थानों, आंगनवाड़ी केंद्रों में कहानी सुनाने, रचनात्मक लेखन, पोस्टर बनाने, निबंध लेखन, कविता और प्रश्नोत्तरी जैसी विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होंगे। साथियों बात अगर हम वीर बाल दिवस के इतिहास की करें तो, बताते हैं कि मुगलों ने अचानक आनंदपुर साहिब के किले पर हमला कर दिया। गुरु गोविंद सिंह जी मुगलों से लड़ना चाहते थे, लेकिन अन्य सिखों ने उन्हें वहां से चलने के लिए कहा। इसके बाद गुरु गोविंद सिंह के परिवार सहित अन्य सिखों ने आनंदपुर साहिब के किले को छोड़ दिया और वहां से निकल पड़े। जब

सार संक्षेप

सर्जरी के कारण बेन स्टोक्स तीन महीने तक नहीं खेल सकेंगे क्रिकेट

लंदन : इंग्लैंड टीम के कप्तान बेन स्टोक्स को अगले महीने बाएं पैर में होने वाली हैमरिस्ट्रिंग की सर्जरी के कारण कम से कम तीन महीने तक क्रिकेट नहीं खेल पाएंगे। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने जारी एक बयान में कहा है कि बेन स्टोक्स जनवरी में हैमरिस्ट्रिंग की सर्जरी करवाएंगे। इसके बाद वह रिहैब की प्रक्रिया के कारण कम से कम तीन महीने के लिए क्रिकेट से दूर रहेंगे। 33 वर्षीय स्टोक्स को इस महीने की शुरुआत में न्यूजीलैंड के खिलाफ तीसरे टेस्ट के तीसरे दिन गेंदबाजी करते समय यह चोट लगी थी। स्टोक्स को चोट के कारण जनवरी और फरवरी में भारत के सफेद गेंद वारे और चैंपियंस ट्रॉफी के लिए इंग्लैंड की टीम में शामिल नहीं किया गया था।

जीएमआर स्पोर्ट्स ने रग्बी इंडिया के साथ साझेदारी की

नई दिल्ली : जीएमआर स्पोर्ट्स ने रग्बी प्रीमियर लीग (आरपीएल) को शुरू करने के लिए रग्बी के राष्ट्रीय शासी निकाय-रग्बी इंडिया के साथ दस वर्षीय रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की है। जीएमआर स्पोर्ट्स ने कहा कि 2025 में शुरू होने वाली आरपीएल दुनिया की पहली फ्रैंचाइजी आधारित रग्बी लीग में से एक होगी। इसमें छह शहरों की टीमें शामिल होंगी और दुनिया भर के शीर्ष रग्बी देशों की बेहतरीन प्रतिभाएं इसमें अपना दमखम दिखाएंगी। इस लीग का लक्ष्य युवा भारतीय प्रतिभाओं को अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों और शीर्ष स्तरीय कोचिंग से परिचित कराकर खेल के लिए एक स्थायी इकोसिस्टम बनाना है। इस परिवर्तनकारी सहयोग पर जीएमआर स्पोर्ट्स के अध्यक्ष किरण कुमार ग्रोही ने कहा कि जीएमआर स्पोर्ट्स में, हम ऐसे प्लेटफॉर्म बनाकर भारत में खेलों के भविष्य को आगे बढ़ाने में विश्वास करते हैं जो एथलीटों और खेल प्रेमियों को समान रूप से प्रेरित करते हैं। रग्बी प्रीमियर लीग केवल एक लीग नहीं है यह ग्रासरूट स्तर पर विकास को बढ़ावा देते हुए विश्व स्तरीय रग्बी को भारत में लाने का एक आंदोलन है। रग्बी इंडिया के साथ साझेदारी हमारे द्वारा खेले जाने वाले हर खेल में अवसर पैदा करने और उत्कृष्टता के लिए मानक स्थापित करने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। हम भारतीय खेलों में इस रोमांचक नए अध्याय की अनुभूति करने के लिए उत्साहित हैं।

पीकेएल मेलबर्न रेड में खेलेंगे प्रो कबड्डी के दिग्गज खिलाड़ी, दिखाएंगे दमखम

पुणे : ऑस्ट्रेलिया के जॉन कैन एरिना में शनिवार से शुरू होने वाले पीकेएल मेलबर्न रेड में प्रो कबड्डी के अजेय ठाकुर, परदीप नवाल, अनूप कुमार, राकेश कुमार, मनिंदर सिंह, सचिन तंवर और अन्य दिग्गज खिलाड़ी खेलेंगे। इस ऐतिहासिक स्पर्धा में चार दुर्जेय टीमों एक-दूसरे का सामना करेंगी। पीकेएल ऑल स्टार मार्वेरिक्स, पीकेएल ऑल स्टार मास्टर्स और प्रो कबड्डी ऑल स्टार्स ऐसी तीन टीमों होंगी, जिनमें पीकेएल के सर्वश्रेष्ठ भारतीय कबड्डी खिलाड़ी शामिल होंगे। साथ ही स्टार खिलाड़ियों से सजी ऑस्ट्रेलियाई टीम आसीन रेड्स भी इस अनोखी प्रतियोगिता में वर्चस्व के लिए संघर्ष करेंगी। इस अनूठे आयोजन से पहले पीकेएल के लीग कमिश्नर अनुपम गोस्वामी ने कहा कि हम मेलबर्न में पीकेएल परफॉर्मंस के लिए दुनिया के सबसे प्रमुख स्पोर्ट्स डेवेलपमेंट शहरों में से एक-विजिट विक्टोरिया-द्वारा आमंत्रित किए जाने से रोमांचित हैं। पीकेएल मेलबर्न रेड कबड्डी की बढ़ते रोलबल अपील को दर्शाता है, जो दिग्गजों के साथ-साथ मौजूदा सितारों को भी एक साथ लाता है। भारत में जारी पीकेएल सीजन-11 के अंतिम चरण में आने से, यह हमारी लीग की क्षमताओं को प्रदर्शित करने के साथ-साथ वास्तव में विश्व स्तरीय खेल के रूप में कबड्डी की ऊर्जा को प्रदर्शित करने का एक शानदार अवसर है।

वायुसेना और हिंदुस्तान की संघर्षपूर्ण जीत

नई दिल्ली : डीएसए प्रीमियर लीग में यहां अम्बेडकर स्टेडियम मैदान पर भारतीय वायुसेना की युवा टीम ने लगातार पराजयों के बाद फ्रेंड्स यूनाइटेड को एक गोल से हरा कर जीत का स्वाद चखा। वहीं दिन के पहले मुकाबले में हिंदुस्तान फुटबॉल क्लब ने वाटिका फुटबॉल क्लब को 2-1 से हराकर दूसरे लेग की पहली जीत दर्ज की। वायुसेना की ओर से सौरभ साधु खान ने विजयी गोल दामा। पहले मुकाबले में हिंदुस्तान के लिए त्रिधरकट सरकार और सेमिन्हाओ वाइफई ने गोल किए, जबकि वाटिका का गोल अभिषेक बॉक्सला ने बनाया। पिछले कुछ मुकाबलों में वायुसेना की टीम ज्यादातर नियमित खिलाड़ियों की गैरमौजूदगी के चलते अपना श्रेष्ठ नहीं दे पाई लेकिन उसे पूरे दमखम से उतारने का लाभ मिला और मुकाबला जीत कर उसने 12 मैचों में 10 अंक जुटा लिए। फ्रेंड्स यूनाइटेड के इतने ही मुकाबलों में 14 अंक हैं। हिंदुस्तान एफसी के 13 और वाटिका के 16 अंक हैं। हिंदुस्तान और वाटिका के मैच में आक्रमक खेल देखने को मिला लेकिन कमजोर निशानेबाजी के चलते वाटिका को हार मिली। वायुसेना ने अधिकांश समय खेल पर पकड़ बनाई लेकिन अनुभव हीनता और कमजोर निशानेबाजी आड़े आई। सौरभ का जीत दिलाते वाला गोल दर्शनीय रहा। उसने लंबी दौड़ के साथ रक्षापंक्ति को मात दी और गोल किया।

महिला वनडे : बंगाल ने लिस्ट-ए क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन चेज किया

राजकोट : सीनियर महिला वनडे ट्रॉफी में बंगाल ने हरियाणा के खिलाफ लिस्ट ए क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन चेज करने का रिकॉर्ड बनाया है। क्वार्टर फाइनल मैच में बंगाल ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी चुनी। हरियाणा से ओपनर शेफाली वर्मा के शानदार 115 गेंद पर 197 रन की मदद से टीम ने 50 ओवर में 389 रन बनाए। जवाब में बंगाल ने 49.1 ओवर में 5 विकेट खोकर 390 रन का टारगेट हासिल किया। टीम से तनुशी सरकार ने 113 रन बनाए और 3 विकेट भी लिए। यह मुकाबला राजकोट के निरंजन शाह स्टेडियम में खेला गया। महिला लिस्ट ए क्रिकेट में इससे पहले सबसे बड़ा रन चेज का रिकॉर्ड न्यूजीलैंड की नॉर्दन डिस्ट्रिक्ट टीम के नाम दर्ज था। साल 2019 में नॉर्दन डिस्ट्रिक्ट्स ने केंटरवरी के खिलाफ 309 रन के लक्ष्य का हासिल कर रिकॉर्ड बनाया था। महिला इंटरनशनल क्रिकेट में श्रीलंका के नाम सबसे ज्यादा रन चेज करने का रिकॉर्ड है। टीम ने इसी साल दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 305 रन के लक्ष्य को हासिल किया था। पिछली 2 सीरीज से टीम से बाहर हरियाणा के लिए शेफाली वर्मा ने 115 गेंदों पर 197 रनों की पारी खेली।

23 फरवरी को होगा 'महामुकाबला'

आईसीसी ने चैंपियंस ट्रॉफी का शेड्यूल रिलीज किया, बांग्लादेश से होगा भारत का ओपनिंग मैच



● दुबई,

आईसीसी ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का शेड्यूल मंगलवार को रिलीज कर दिया। हाइब्रिड मॉडल में होने वाला टूर्नामेंट 19 फरवरी से शुरू होकर 9 मार्च तक चलेगा। 19 दिन में 15 मैच खेले जाएंगे। दूसरे सेमीफाइनल और फाइनल के लिए रिजर्व डे भी रखा गया है। भारत और पाकिस्तान के बीच ग्रुप मैच 23 फरवरी को दुबई में होगा।

भारत अपने सभी मैच दुबई में ही खेलेगा, टीम के ग्रुप में बांग्लादेश और न्यूजीलैंड भी हैं। दुबई में ही एक सेमीफाइनल भी खेला जाएगा। अगर भारत फाइनल में पहुंचे तो यह मैच भी दुबई में होगा। जबकि टूर्नामेंट के बाकी 10 मैच पाकिस्तान में होंगे। चैंपियंस ट्रॉफी 8 साल बाद होने जा रही है, 2017 में आखिरी बार पाकिस्तान ने भारत को फाइनल हराकर खिताब जीता था। बांग्लादेश के खिलाफ अभियान शुरू करेगा भारत भारत ग्रुप-ए में है। टीम के ग्रुप में पाकिस्तान, बांग्लादेश और न्यूजीलैंड हैं। वहीं दूसरे ग्रुप में ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, साउथ अफ्रीका और अफगानिस्तान हैं। 4 और 5 मार्च को 2 सेमीफाइनल होंगे, वहीं 9 मार्च को फाइनल खेला जाएगा। भारत और पाकिस्तान की टीमों एक-दूसरे के देश में जाकर क्रिकेट नहीं खेलेंगी। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारत के सभी मैच न्यूट्रल वेन्यू पर खेले जाएंगे। पाकिस्तानी टीम भी 2027 तक किसी भी टूर्नामेंट के लिए भारत नहीं आएगी। उसके मैच भी न्यूट्रल वेन्यू पर होंगे। आईसीसी की इस फैसले की जानकारी गुरुवार 19 दिसंबर को सामने आई। मीटिंग में यह फैसला पहले ले लिया गया था। भारत में 2025 महिला वनडे वर्ल्ड कप, 2026 में टी-20 वर्ल्ड कप भारत और श्रीलंका में होना है। इससे पहले जब आईसीसी ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 को हाइब्रिड मॉडल में करने की बात पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) को बताई थी, तब पीसीबी ने आईसीसी के सामने भारत में टीम न भेजने की मांग रखी थी, जिसे अब आईसीसी ने मान लिया है। सभी 15 मैचों हाइब्रिड मॉडल के लिए माने आईसीसी के नए चेयरमैन जय शाह की मौजूदगी

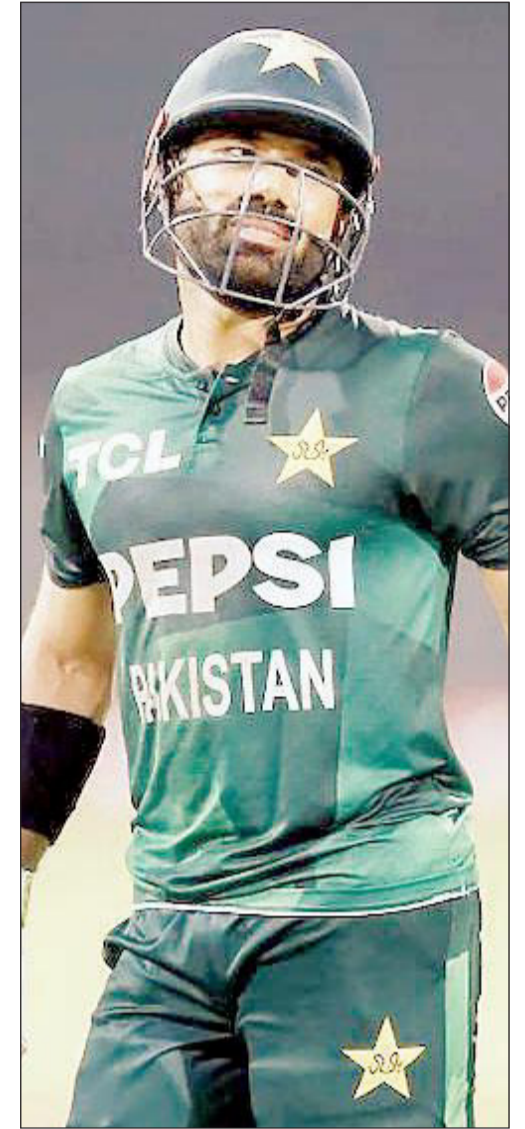


● 23 फरवरी को दुबई में पाकिस्तान से थिड़ेंगे भारत

● 19 फरवरी से शुरू होकर 9 मार्च तक चलेगा टूर्नामेंट, 19 दिन में खेले जाएंगे 15 मैच

● 4 और 5 मार्च को 2 सेमीफाइनल होंगे, वहीं 9 मार्च को खेला जाएगा टूर्नामेंट का फाइनल

में 5 दिसंबर को सभी बोर्डों में मीटिंग हुई थी। शाह इसी महीने दुबई स्थित हेडक्वार्टर भी पहुंचे थे। मीटिंग में सभी 15 बोर्डों में हाइब्रिड मॉडल के लिए मान गए। पाकिस्तान ने भी मीटिंग में फैसले का विरोध नहीं किया। शुरुआत में भारत ने इस टूर्नामेंट के लिए अपनी टीम पाकिस्तान भेजने से इनकार कर दिया था। पाकिस्तान पहले तो इस बात पर अड़ा रहा कि भारत को पाकिस्तान आना ही होगा, लेकिन भारत के सख्त रुख के बाद पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड आखिरकार हाइब्रिड मॉडल के लिए तैयार हो गया है।



पूर्व क्रिकेटर विनोद कांबली के स्वास्थ्य में सुधार

मुंबई, वार्ता : विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं के कारण अस्पताल में भर्ती पूर्व भारतीय क्रिकेटर विनोद कांबली का स्वास्थ्य स्थिति में सुधार हो रहा है। उनका इलाज कर रहे डॉक्टरों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। कांबली को बेचेनी महसूस होने के बाद सोमवार को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। उनका इलाज कर रहे डॉक्टरों ने बताया कि कांबली निम्न रक्तचाप और मूत्र मार्ग के संक्रमण (यूटीआई) सहित विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित हैं, लेकिन उन पर इलाज का असर हो रहा है। उनकी हालत 'स्थिर' हो रही है। डॉक्टरों ने बताया कि सोडियम और पोटेशियम में असंतुलन के कारण उनमें जकड़न और गतिशीलता संबंधी समस्याएं देखी गईं। उन्होंने कहा कि उनके मरिफक्त में पिछले स्ट्रोक के कारण बने थक्के भी पाए गए, जिससे न्यूरोडीजेनेरेटिव परिवर्तन हुए। इसके कारण उनकी याददाश्त और आंगों का समन्वय प्रभावित हुआ है।



महिला अंडर-19 टी-20 विश्वकप में निकी को कमान

मुंबई, वार्ता : अगले महीने मलेशिया में होने वाले महिला अंडर 19 टी-20 विश्वकप में भारतीय टीम की अगुवाई निकी प्रसाद करेंगी। चयनकर्ताओं ने हाल ही में अंडर-19 एशिया कप जीतने वाली 15 सदस्यीय दल में एकमात्र बदलाव वैष्णवी एस के रूप में किया गया है। वैष्णवी मध्यम गति की तेज गेंदबाज नंदना एस की जगह लेंगी। नंदना को स्टैंडबाय खिलाड़ियों के रूप में रखा गया है। जी तृषा, शकिल और सोनम यादव का यह दूसरा अंडर 19 विश्वकप होगा। यह टूर्नामेंट भारत 18 जनवरी से दो फरवरी तक खेला जाएगा। कुल 16 टीमों वाले इस टूर्नामेंट में टीमों को चार के समूह में चार अलग-अलग ग्रुप में विभाजित किया गया है। भारत के साथ ग्रुप ए में मलेशिया, श्रीलंका और वेस्टइंडीज की टीम शामिल हैं। लीग स्तर के बाद हर ग्रुप से तीन टीमों सुपर सिक्स में जाएंगी जहां उन्हें छह-छह के समूह में वर्गीकृत किया जाएगा। लीग स्टेज में सुपर सिक्स की अन्य टीमों के खिलाफ मिले अंक और नेट रन रेट भी सुपर सिक्स स्टेज में शामिल होंगे। सेमीफाइनल मुकाबले 31 जनवरी और फाइनल दो फरवरी को खेला जाएगा।

अब मेरा घुटना ठीक, प्रैक्टिस बोलैंड की वापसी, सैम करेंगे पदार्पण में चोट लगी थी : रोहित शर्मा

● मेलबर्न
भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मेलबर्न टेस्ट से पहले अपनी फिटनेस पर अपडेट दिया है। उन्होंने मंगलवार को कहा कि उनका घुटना ठीक है। हालांकि, इंडियन कैप्टन ने बैटिंग ऑर्डर में अपनी पोजिशन पर संदेह बरकरार रखा।

37 साल के रोहित शर्मा ने कहा कि कौन कहां बल्लेबाजी करेगा इसको लेकर चिंता ना करें। हमें इस पर विचार करने की जरूरत है और यह ऐसी चीज नहीं है जिस पर मैं यहां चर्चा करूँ। हम वहीं करेंगे जो टीम के लिए बेस्ट होगा। रोहित मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर रविवार को प्रैक्टिस के दौरान चोटिल हो गए थे। उनके बाएं घुटने में चोट लग गई थी। उनकी चोट को लेकर कई चिंताएं थीं। यहां टीम इंडिया 26 दिसंबर से बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी का चौथा मुकाबला खेलेगी। रविवार 22 दिसंबर को रोहित के घुटने पर चोट लगी थी। वे बर्फ से सिकाई करते नजर आए थे। छठे नंबर पर उतरे रहे हैं रोहित, 19 रन ही बना सके। अपने दूसरे बतरे के जन्म के कारण पहले टेस्ट मैच में नहीं खेल पाए

कहा- बैटिंग ऑर्डर की चिंता छोड़ो, कोहली रन बनाने का तरीका ढूंढ लेंगे

थे। उन्हें दूसरे टेस्ट में सलामी बल्लेबाज के रूप में वापसी करनी थी, लेकिन केएल राहुल ने पर्थ में 77 रन की प्रभावशाली पारी खेल कर भारत की जीत में अहम भूमिका निभाई।

इसके बाद भारतीय कप्तान को छठे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरना पड़ा। हालांकि, रोहित के लिए यह बदलाव अच्छा नहीं रहा। वे अब तक तीन पारियों में केवल 19 रन ही बना सके हैं। दूसरी और राहुल ने तीसरे टेस्ट मैच की पहली पारी में 84 रन बनाकर शीर्ष क्रम में अपना दावा मजबूत किया। रोहित बोले कि कोहली रन बनाने का तरीका ढूंढ लेंगे। विराट कोहली की खराब फॉर्म और ऑफ स्टंप से बाहर जात गेंदों को खेलने में परेशानी पर रोहित ने कहा कि कोहली इससे पार पाने का तरीका ढूंढ लेंगे।

● मेलबर्न
स्कॉट बोलैंड एक बार फिर मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) पर होने वाले टेस्ट मैच में वापसी और सैम कॉन्स्टास ऑस्ट्रेलिया के लिए पदार्पण करेंगे।

कॉन्स्टास 19 साल और 85 दिन में टेस्ट पदार्पण करने वाले ऑस्ट्रेलिया के चौथे सबसे युवा खिलाड़ी होंगे। इयान क्रैग, मौजूदा कप्तान रैट कर्मिंस और टॉम गैरेट ने ही उनसे कम उम्र में पदार्पण किया है। मकडॉनल्ड ने मंगलवार को प्रशिक्षण के बाद संवाददाता सम्मेलन में इसकी पुष्टि की। ऑस्ट्रेलिया के चयनकर्ता टोनी डोडेमाडे ने उसी सुबह कॉन्स्टास को अच्छी खबर दी, लेकिन उन्होंने कहा कि शेष एकादश को पुष्टि क्रिसमस के दिन होगी

यह कर्मिंस मैच से पहले संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करेंगे। उन्होंने कहा कि हमने गार्मियों की शुरुआत में ही कहा था कि हम पीछे नहीं हटेंगे और उम्र कोई बाधा नहीं होगी। और उसके पास शॉर्ट्स की एक सीरीज है, विरोधियों पर दबाव बनाने की क्षमता है और वह मिले अवसर का फायदा



उठाता है। हम वास्तव में उसके लिए उत्साहित हैं। उन्होंने कहा कि उम्रिद है कि बायें हाथ का बल्लेबाज ट्रेविस हेड मैच खेलने के लिए फिट होगा। हेड ने मंगलवार को नेट्स में थोड़ी दौड़ लगाई और क्षेत्ररक्षण किया। लेकिन मेलबर्न में खेलने के लिए उन्हें फिटनेस टेस्ट देना होगा। ब्रिसबेन में आईसीसी जहां उन्हें छह-छह के समूह में वर्गीकृत किया जाएगा। लीग स्टेज में सुपर सिक्स की अन्य टीमों के खिलाफ मिले अंक और नेट रन रेट भी सुपर सिक्स स्टेज में शामिल होंगे। सेमीफाइनल मुकाबले 31 जनवरी और फाइनल दो फरवरी को खेला जाएगा।

पूर्व क्रिकेटर नमन ओझा के पिता को हुई सात साल की जेल

बैतूल : पूर्व क्रिकेटर नमन ओझा के पिता को बैंक ऑफ महाराष्ट्र में गबन के मामले में कोर्ट ने 7 साल की सजा सुनाई है। बैतूल के बैंक ऑफ महाराष्ट्र की जौलखेड़ा शाखा में हुए फ्रॉड के चर्चित मामले में मुलताई अपर सत्र न्यायालय ने मंगलवार को फैसला सुनाया। न्यायालय ने गबन के मास्टरमाइंड अभिषेक रत्नम को 10 साल की सजा और 80 लाख रुपये के जुर्माने से दंडित किया। वहीं सह-आरोपियों, जिनमें पूर्व क्रिकेटर नमन ओझा के पिता विनय ओझा, बैंककर्मी धनराज और लखन शामिल हैं, को 7-7 साल की सजा और 7-7 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है। यह मामला साल 2013 का है, जब जौलखेड़ा ग्राम पंचायत स्थित बैंक ऑफ महाराष्ट्र की शाखा में गबन का मामला सामने आया। मास्टरमाइंड अभिषेक रत्नम ने बैंक अधिकारियों के पासवर्ड का उपयोग कर गबन को अंजाम दिया। जांच के दौरान पता चला कि इस गबन में बैंक के अन्य कर्मचारी भी शामिल थे।

हरलीन देओल ने जड़ा शतक, मारे 16 चौके

भारत ने दूसरे वनडे में वेस्टइंडीज को 115 रन से हराकर सीरीज में अजेय बढ़त बनाई

● वडोदरा
हरलीन देओल (115) की शतकीय, प्रतिका रावल (76), स्मृति मंधाना (53) और जेमिमाह रॉड्रिग्स (52) की अर्धशतकीय पारियों के बाद गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन की बलीलत भारतीय महिला टीम ने मंगलवार को दूसरे एकदिवसीय मुकाबले में वेस्टइंडीज को 115 रनों से हराकर तीन एकदिवसीय मैचों की सीरीज में 2-0 से अजेय बढ़त बना ली है।

359 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी वेस्टइंडीज शुरुआत अच्छी नहीं और उसने अपना पहला विकेट 20 के स्कोर पर गवा दिया। दीप्ति शर्मा किआना जोसेफ (15) को छठे ओवर में प्रतिका रावल के हाथों कैच आउट कराकर भारत पहली सफलता दिलाई। तितास साधु ने 10वें ओवर में भारत को दूसरी सफलता दिला दी है। साधु ने पहला मैच खेल रहीं क्रॉफ्टन को लगातार दूसरी छोटी गेंद डाली और वह शॉट जल्दी खेल बैटिंग और तितास साधु ने एक आसान सा कैच पकड़ लिया। क्रॉफ्टन (13) रन

बनाकर आउट हुई। इसके बाद प्रिया मिश्रा ने बैंकऑफ लेंथ गेंद पर रशावा विलियम्स (शून्य) को आउट किया। 17वें ओवर में रेणुका सिंह ठाकुर ने इंड्रेंडा डॉटिन (10) को पवेलियन चलता कर दिया है। हालांकि इस दौरान कप्तान हेली मैथ्यूज एक छोर धामे रही और उन्होंने अर्धशतक पूरा किया। कैपबेल और मैथ्यूज के बीच पांचवें विकेट के लिए 112 रनों की साझेदारी हुई। साधु ने कैपबेल तितास (38) को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। इसी दौरान मुश्किल परिस्थिति में मैथ्यूज ने भारत में अपना पहला शतक पूरा किया। यह उनके करियर का सातवां शतक है। महिलाओं के वनडे में मैथ्यूज तीसरी ऐसी खिलाड़ी बन गईं जिसने 100 विकेट के साथ-साथ सात शतक भी लगाया है। 39वें ओवर में प्रतिका रावल ने मैथ्यूज (106) को आउटकर वेस्टइंडीज को सातवां झटका दिया। इसके बाद जायडा जेम्स (25), ऐफी फ्लेवर (22) और किरश्मा रामहेरक (तीन) रन बनाकर आउट हुईं।



स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सैयद जकी हैदर के लिए इरानीयन आर्ट प्रिंटर्स 1534 कासिमजान स्ट्रीट दरियागंज नई दिल्ली 11006 से मुद्रित कराकर, 2684 गली काले खां कूचा चलान दरियागंज नई दिल्ली 02 से प्रकाशित किया।

संपादक : सैयद जकी हैदर- हैड ऑफिस :- एफ19/4 सेकेंड फ्लोर नफीश रोड जामिया नगर दिल्ली- 110025., सम्पर्क सूत्र :- 9911371802, 9810383593
जितेन्द्र कुमार बिस्वाल ब्यूरो चीफ उड़ीसा/ गोविंद कनोडिया/ पटना/ सैय्यद यूसुफ अली नक़वी-पॉलिटिकल एडिटर। ई-मेल:- dailyloktantra@gmail.com

किसी भी प्रकार के विवाद हेतु निपटारे के लिए केवल दिल्ली न्यायालय ही मान्य होगी।

नोट- किसी भी समाचार/आलेख पर दावा प्रति दावा/आपत्ति समाचार प्रकाशन के 15 दिनों के अन्तराल तक ही मान्य होगा। समाचार पत्र में प्रकाशित आलेख से संपादक/प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्षेत्रीय कार्यालय अनवार मजिल नया टोला गंज नंबर 01 बेतिया/ बिहार/ पिन नंबर 84 5438/>> संवाददाता, सना खाना/(डॉ. अमानुल हक) स्थानीय संपादक/बिहार)